

अक्रायदे नूर

अलहसनैन इस्लामी नैटवर्क

मुक़द्दमा

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस सलातो वस सलामो अला खैरे
खलक़िहि मुहम्मद व आलिहित ताहेरीन ला सिय्यमा बक्रिय्यतिल्लाहि फ़िल
अरज़ीन अल्लाहुम्मज अलना मिन आवानिहि व अंसारिहि

इंसान तीन चीज़ों का मजमूआ है: अफ़कार, सिफ़ात और किरदार। अगर यह
तीनों चीज़ें सही जेहत और सही रास्ते पर हों तो इंसान अपने हदफ़ यानी मंज़िल
कमाल तक पहुचता है अब अगर कोई दीन इंसान को खुशबख्त बनाना चाहता है
तो उसे ऊपर बयान की गई तीनों चीज़ों का अहल होना ज़रूरी है। दीने इस्लाम
तन्हा वह दीन है जिसने तीनों जिहात पर खुसूसी तवज्जो दी है और इस सिलसिले
में अहकाम व दस्तूरात बयान कियह हैं, उन तीनों में से इल्मे अखलाक़ इंसानी
सिफ़ात को सँवारता है, फ़ुरु ए दीन उस के रफ़तार व किरदार को बनाते हैं, उसूले
दीन इंसान के अफ़कार व नज़रियात को जेहत देते हैं।

नूर इस्लामिक मिशन, तबलीगे दीन के हवाले से हकीकी इस्लाम को पहचनवाने
और अफ़राद की सही इस्लामी तरबीयत के लिये तीनों जिहात पर काम कर रहा

है। इसी सिलसिले की एक कड़ी “अक्रायदे नूर” बाज़ अहम और ज़रूरी मौजूआत पर पाठ (सबक) की सूरत में आप के हाथों में है।

इस मजमूए की बाज़ खुसूसियात

1. मताल्लिब को कम और आसान ज़बान में पेश किया गया है ता कि उस्ताद की मदद के बग़ैर भी समझा जा सके।
2. आम फ़हम बनाने के लियह सख्त इस्तेलाहों और पेचीदा दलीलों वग़ैरह से परहेज़ किया गया है।
3. हर सबक के आखिर में खुलासा और सवालात भी पेश किये गये हैं ता कि पढ़ने वाला नतीजे की तरफ़ भी मुतवज्जे हो सके और सबक की मशक भी हो जाये।

खुदा से दुआ है कि हमें हकीकी दीन को समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

पहला सबक

दीन की ज़रूरत और इस्लाम की हक़कानीयत

दीन

दीन लुगत में इताअत और जज़ा वगैरह के मअना में है और इस्तेलाह में ऐसे अमली और अखलाकी अहकाम व अक्रायद के मजमूए को कहते हैं जिसे खुदा ने नबियों के ज़रिये इंसान की दुनियावी और आखिरत की हिदायत व सआदत के लियह नाज़िल फ़रमाया है, उन अक्रायद को जान कर और उन अहकाम पर अमल करके इंसान दुनिया व आखिरत में सआदत मंदी हासिल कर सकता है। जो इल्मे वुजूदे खुदा, सिफ़ाते सुबूतिया व सल्बिया, अद्ल, नबुव्वत, इमामत और क़यामत के बारे में बहस करता है उसे उसूले दीन कहते हैं।

दीन की ज़रूरत

दीन हर इंसान के लियह ज़रूरी है इस लियह कि इंसान को फुज़ूल पैदा नही किया गया है बल्कि उस की ज़िन्दगी के कुछ उसूल होते है जिन पर अमल करके वह अपनी ज़िन्दगी में कमाल पैदा कर सकता है और सआदत की मंज़िलों तक पहुच सकता है लेकिन सवाल यह है कि उन उसूल व क़वानीन को कौन मुअय्यन करे? इस सवाल के जवाब में तीन राहें मौजूद हैं जिन में से सिर्फ़ एक राह सही है:

पहला रास्ता

हर इंसान अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ अपने लिये क़ानून बनाए, यह रास्ता ग़लत है इस लिये कि इंसान का इल्म महदूद है जिसके नतीजे में वह हमेशा ग़लतियाँ करता रहता है और उस की नफ़सानी ख़्वाहिशात का तूफ़ान किसी वक़्त भी उस को ग़र्क़ कर सकता है लिहाज़ा आप खुद सोचें कि क्या इंसान अपनी नाक़िस और महदूद फ़िक़्र के ज़रिये अपने लियह उसूल व क़वानीन बना सकता है।

दूसरा रास्ता

इंसान लोगों की फ़िक्रों और सलीकों के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के लिये क़ानून मुअय्यन करे, यह रास्ता भी ग़लत है इस लिये कि लोगों की तादाद भी ज़्यादा है और उन की ख़्वाहिशें, फ़िक्रें और सलीकें भी मुख़्तलिफ़ हैं तो इंसान किस किस की बातों पर अमल करेगा और दूसरी बात यह है कि दूसरे लोग भी तो इंसान ही हैं इस लिये उन में भी ग़लतियों का बहुत ज़्यादा इम्कान पाया जाता है लिहाज़ा जब लोग अपने लिये भी क़ानून नहीं बना सकते तो फिर किसी दूसरे के लिये किस तरह क़ानून बना सकते हैं?

तीसरा रास्ता

इंसान खुद को किसी ऐसी ज़ात के हवाले कर दे जिस ने उसको बनाया है और जो उसके माज़ी, हाल और मुस्तक़िबल से आगाह है यानी इंसान अपनी ज़िन्दगी की तरीक़ा और जीने का सलीक़ा उसी से हासिल करे जिसने उसे पैदा किया है।

यह तीसरा रास्ता ही सही है इस लिये कि जिस तरह हम अपनी गाड़ी को मैकेनिक और अपने जिस्म को बीमारी के वक़्त डाक्टर के हवाले कर देते हैं क्योकि वह इस सिलसिले में हम से ज़्यादा आगाह है उसी तरह हमें अपनी ज़िन्दगी के उसूल व क़वानीन को मुअय्यन करने के लिये अपने आप को उस

ज़ात के हवाले कर देना चाहिये जो हर चीज़ का जानने वाला है। वह ज़ात सिर्फ़ खुदा वंदे आलम की ज़ात है जिसने इस्लाम की शकल में इंसान की इंफ़ेरादी और समाजी ज़िन्दगी के लियह उसूल व क़वानीन नाज़िल फ़रमाए हैं।

इस्लाम की हक़क़ानीयत

दीने इस्लाम चूँकि आखिरी दीन है इसी लियह उसे खुदा ने कामिल बनाया है और उसी मुक़द्दस दीन के आने के बाद दूसरे आसमानी दीन ख़त्म कर दियह गयह क्योकि जब कामिल आ जाये तो नाक़िस की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रह जाती, दीने इस्लाम को खुदा वंदे आलम ने हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वा आलिहि वसल्लम के ज़रिये इंसान की हिदायत के लियह नाज़िल फ़रमाया है, सआदत का यह चिराग़ दुनिया वालों के लियह उस वक़्त रौशन हुआ जब इंसान और इंसानियत को बुराईयों और ख़राबियों के अँधेरों ने घेर रखा था।

खुदा की तरफ़ से भेजा गया यह मुक़द्दस दीन ऐसा है कि हर फ़र्द और हर तबक़ा उस के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार कर दुनिया व आखिरत की बेहतरीन खुशियाँ हासिल कर सकता है।

बुढ़े व बच्चे, पढ़े लिखे व अनपढ़, मर्द व औरत, अमीर व गरीब सब के सब मसावी तौर पर दीने इस्लाम से फ़ायदा उठा सकते हैं इस लिये कि इस्लाम दीने फ़ितरत है और फ़ितरत इंसानों के तमाम तर इख़्तिलाफ़ात के बावजूद सब के अंदर एक जैसी होती है।

नतीजा यह हुआ कि इस्लाम एक ऐसा दीन है जो इंसानों की बुनियादी और फ़ितरी मुश्किलों को हल करता है लिहाज़ा यह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला दीन है। यह बात भी वाज़ेह है कि इस्लाम आसान दीन है और इंसान पर सख़्ती नहीं करता, खुदा वंदे आलम ने इस दीन के बुनियादी उसूल व क़वायद अपनी किताब क़ुरआने मजीद में बयान फ़रमाया है जो पैग़म्बरे इस्लाम (स) पर नाज़िल हुई है।

खुलासा

-लुगत में दीन, इताअत और जज़ा के मअना में है और इस्तेलाह में उन अमली व अख़लाकी अहकाम को दीन कहते हैं जिसे खुदा वंद ने नबियों के ज़रिये नाज़िल फ़रमाया है।

-हर इंसान के लियह दीन ज़रूरी है क्योकि वह दीन के बगैर अपनी ज़िन्दगी में सआदत हासिल नही कर सकता।

-सिर्फ़ खुदा, इंसान की ज़िन्दगी के लियह क़ानून बना सकता है क्योकि वह हर चीज़ का जानने वाला है।

-दीने इस्लाम, आखिरी और कामिल आसमानी दीन है जिसे हमारे नबी हज़रत मुहम्मद (स) ले कर आयह हैं और उस के बुनियादी क़वानीन कुरआने मजीद में मौजूद हैं।

-इस्लाम दीने फ़ितरत है लिहाज़ा यह दीन बड़े छोटे, पढ़े लिखे, ज़ाहिल, मर्द व औरत, गोरे काले, अमीर व ग़रीब सब के लियह सआदत बख़्श है।

सवालात

1. इस्तेलाह में दीन के क्या मअना है?
2. दीन का होना क्यों ज़रूरी है?
3. इंसान अपनी ज़िन्दगी के लियह क़ानून क्यो नही बना सकता है?

4. क्यो सिर्फ़ खुदा ही इंसान की ज़िन्दगी के लिये उसूल व क़वानीन बना सकता है?

5. क्या इस्लाम हर फ़र्द और तबक़े के लियह सआदत बख़्श है? क्यों?

दूसरा सबक़

दीन की हकीक़त

हमने पहले सबक़ में पढ़ा कि अगर हम खुदा के भेजे हुए दीन और उस के ज़रिये बनाये गये उसूल और क़ानून पर अमल करें तो दुनिया व आख़िरत में सआदत मंदा हासिल कर सकते हैं। सिर्फ़ वह शख्स सआदत मंद और खुशबख्त है जो अपनी ज़िन्दगी को गुमराही और जिहालत में न गुज़ारे बल्कि अच्छे अखलाक़ के साथ नेक काम अंजाम दे, दीने इस्लाम ने भी इस सआदत की तरफ़ इस अंदाज़ में दावत दी है:

1. उन सही अक्रायद का ऐहतेराम करो जिस को तुम ने अपनी अक़ल और फ़ितरत के ज़रिये क़बूल किया है।

2. नेक और अच्छा अख़लाक़ रखो।

3. हमेशा नेक और अच्छे काम करो।

इस बुनियाद पर दीन तीन चीज़ों का मजमूआ है:

1. अक्रायद या उसूले दीन

2. अख़लाक़

3. अहक़ाम व अमल

1. अक्रायद व उसूले दीन

अगर हम अपनी अक़ल व शुऊर का सहारा लें तो मालूम होगा कि इतनी बड़ी दुनिया और उस की हैरत अंगेज़ निज़ाम खुद ब खुद वुजूद में नहीं आ सकता और उसमें पाया जाने वाला यह नज़म बग़ैर किसी नज़म देने वाले के वुजूद में नहीं आ सकता बल्कि ज़रूर कोई ऐसा पैदा करने वाला है जिसने अपने ला महदूद इल्म व ताक़त और तदबीर के ज़रिये इस दुनिया को बनाया है और वही उस के निज़ाम

को एक मोहकम व उस्तवार क़ानून के साथ चला रहा है, उसने कोई चीज़ बे मक़सद पैदा नहीं की है और दुनिया का छोटी बड़ी कोई भी चीज़ उस के क़ानून से बाहर नहीं है।

इसी तरह इस बात को भी नहीं माना जा सकता कि ऐसा मेहरबान ख़ुदा जिसने अपने लुत्फ़ व करम के ज़रिये इंसान को पैदा किया है वह इंसानी समाज को उस की अक़ल पर छोड़ दे जो अकसर हवा व हवस का शिकार रहती है लिहाज़ा ज़रूरी है कि ख़ुदा ऐसे नबियों के ज़रिये कुछ उसूल व क़वानीन भेजे जो मासूम हो यानी जिन से ग़लती न होती हो और यह भी ज़रूरी है कि ख़ुदा कुछ ऐसे लोगों को आख़िरी नबी का जानशीन बनाये जो उन के बाद उन के दीन को आगे बढ़ाये और नबी की ख़ुद भी मासूम हों।

चूँकि ख़ुदा के बताए हुए रास्ते पर अमल करने या न करने की जज़ा या सज़ा इस महदूद और मिट जाने वाली दुनिया में पूरी तरह से ज़ाहिर नहीं हो सकती लिहाज़ा ज़रूरी है कि एक ऐसा मरहला हो जहाँ इंसान के अच्छे या बुरे कामों का ईनाम या सज़ा दी जा सके। किताब के अगले भाग में इसी के बारे में बताया जायेगा।

2. अखलाक

दीन हमें हुक्म देता है कि अच्छी सिफ़्तों और आदतों को अपनायें, हमेशा खुद को अच्छा बनाने की कोशिश करें। फ़र्ज शिनास, खैर ख्वाह, मेहरबान, खुशमिज़ाज

और दूसरों से मुहब्बत रखने वाले बनें, हक़ की तरफ़दारी करें, ग़लत का कभी साथ न दें, कहीं भी हद से आगे न बढ़ें, दूसरों की जान, माल, ईज़ज़त का ख़याल रखें, इल्म हासिल करने में सुस्ती न करें, खुलासा यह कि ज़िन्दगी के हर मरहले में अदालत की रिआयत करें।

3. अहकाम व अमल

दीन हमें यह भी हुक्म देता है कि हम वह काम अंजाम दें जिस में हमारी और समाज की भलाई हो और उन कामों से बचें जो इंफ़ेरादी या समाजी ज़िन्दगी में फ़साद या बुराई का सबब बनते हैं। इबादत की सूरत में ऐसे आमाल अंजाम दें जो बंदगी और फ़रमाँ बरदारी की अलामत हैं जैसे नमाज़, रोज़ा और उस के अलावा तमाम वाजिबात को अंजाम दें और तमाम हराम चीज़ों से परहेज़ करें।

यही वह क़वानीन हैं जो दीन लेकर आया है और जिस की तरफ़ हमें दावत देता है ज़ाहिर है कि उन में से बाज़ क़वानीन ऐतेकादी है यानी उसूले दीन से मुतअल्लिक हैं, बाज़ अखलाकी है और बाज़ अमली हैं, दीन के यह तीनों हिस्से एक दूसरे से जुदा नहीं हैं बल्कि जंजीर की कड़ियों की तरह एक दूसरे से मिले हुए हैं। इन्हीं क़वानीन पर अमल करके इंसान सआदत हासिल कर सकता है।

खुलासा

-वह शख्स सआदतमंद है जो अपनी ज़िन्दगी को जिहालत और गुमराही में न गुज़ारे, अच्छा अखलाक रखता हो और अच्छे काम करता हो।

-दीन तीन हिस्सों में तक्रसीम होता है:

1. अक़ायद या उसूले दीन

2. अखलाक

3. अहकाम व अमल।

-दीन के यह तीनों हिस्से एक दूसरे से जुदा नहीं है बल्कि जंजीर की कड़ियों की तरह एक दूसरे जुड़े हुए हैं।

सवालात

1. कौन सआदतमंद हैं?
2. दीन के कितने हिस्से हैं? मुख्तसर बयान करें
3. क्या दीन के तीनों हिस्से एक दूसरे अलग हैं?

तीसरा सबक

उसूले दीन में तकलीद करना सही नहीं है

हमारे समाज में बहुत से लोग उसूले दीन पर ईमान रखते हैं और फुरु ए दीन पर अमल करते हैं लेकिन उन में कुछ ऐसे अफ़राद भी हैं जो फुरु ए दीन की तरह उसूले दीन में भी तकलीद करते हैं यानी वह जिस तरह से नमाज़, रोज़े के मसायल में किसी मुजतहिद की तकलीद करते हैं उसी तरह तौहीद, अद्ल, नबुव्वत, इमामत और क़यामत के बारे में भी अपने बुजुर्गों की तकलीद करते हैं और कहते हैं: क्योकि हमारे बाप दादा ने कहा है कि खुदा एक है, आदिल है, हज़रत मुहम्मद (स) नबी है, इमाम बारह हैं और क़यामत आयेगी। इस लिये हम भी उन सब चीज़ों पर यक़ीन रखते हैं। लेकिन यह तरीका बिल्कुल दुरुस्त नहीं है, इस लिये कि उसूले दीन में तकलीद जायज़ ही नहीं है।

हर इंसान के लिये ज़रूरी है कि वह उसूले दीन (तौहीद, अद्ल, नबुव्वत, इमामत और क़यामत) पर दलील के साथ ईमान रखें और सिर्फ़ इस बात पर बस न करें कि चूँकि हमारे बाप दादा मुसलमान हैं लिहाज़ा हम भी मुसलमान हैं।

अब सवाल यह है कि उसूलें दीन को दलील के साथ जानने के लिये कितनी किताबों का मुतालआ किया जाये और कौन कौन सी मोटी मोटी किताबों को पढ़ा जाये? उस का जवाब यह है कि दलील जानने के लिये मोटी मोटी किताबों का मुतालआ करने की ज़रूरत नहीं है बल्कि इंसान सिर्फ आसान और सादा दलीलों को छोटी छोटी किताबों को पढ़ने या आलिमों से सवाल करने के ज़रिये जान ले तो यही काफी है। हाँ अगर ज़्यादा जानना चाहता है तो बड़ी बड़ी किताबों का मुतालआ और इस सिलसिले में तहकीक़ करना बेहद फ़ायदे मंद साबित होगा।

फ़िर यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि सादा और आसान दलील से क्या मुराद है? किसी दलील के सादा और आसान होने का मेयार क्या है? इस के जवाब में हम आप के लिये एक मिसाल पेश करते हैं जिस से आप समझ सकते हैं कि सादा दलील क्या होती है। एक बुढ़िया चर्खा चला रही थी, उसी हालत में उससे पूछा गया कि खुदा के वुजूद पर तुम्हारे पास क्या दलील है? तुम कैसे यक़ीन रखती हो कि कोई खुदा है? उसने फ़ौरन चर्खे से हाथ हटा लिया जिस की वजह से चर्खा रुक गया तो बुढ़िया ने कहा: जब यह छोटा सा चर्खा किसी चलाने वाले के बग़ैर नहीं चल सकता तो इतनी बड़ी दुनिया किसी चलाने वाले के बग़ैर किस तरह से चल सकती है? इस दुनिया का पूरे नज़्म के साथ चलते रहना इस बात की दलील है कि कोई खुदा है जो उसे चला रहा है।

बुढ़िया के इस वाक़ेया से सादा और आसान दलील का मेयार समझ में आ जाता है। अब हम से अगर कोई कहे कि खुदा के वुजूद को साबित करो तो हम उसे यह जवाब दे सकते हैं कि हर चीज़ का कोई न कोई बनाने वाला होता है, हर चीज़ का कोई न कोई चलाने वाला होता है लिहाज़ा इतनी बड़ी दुनिया को चलाने वाला कोई न कोई ज़रूर है और वह खुदा है।

नोट: हाँ अगर किसी दीनदार और काबिले ऐतेमाद आलिमें दीन की बताई हुई दलील की बुनियाद पर यक़ीन हासिल हो जाये तो उसे उस यक़ीन की बुनियाद पर उसूले दीन को क़बूल कर सकता है और इसमें कोई हरज भी नहीं है। इस लियह कि कुरआने पाक में तक़लीद के बारे में काफ़िरों को बुरा भला कहा गया है वह उन के लिये यक़ीन हासिल न होने की वजह से है क्योकि वह गुमान पर अमल करते थे जैसा कि इरशाद हो रहा है:

وما لهم بئلك من علم ان هم الا يظنون

उन्हे इस का यक्रीन नही है बल्कि वह सिर्फ गुमान करते हैं। (सूरह जासिया आयत २४)

खुलासा

-उसूले दीन में तकलीद जायज़ नही है बल्कि उन उसूल को सादा और आसान दलीलों के ज़रिये जानना ज़रूरी है लिहाज़ा हम यह नही कह सकते कि चूँकि तौहीद, अद्ल, नबुव्वत, इमामत और कयामत पर हमारे बुज़ुर्गों को ईमान है लिहाज़ा हम भी उन पाँचों उसूलों पर ईमान रखते हैं।

-सादा और आसान दलील की मिसाल, चर्खा चलाने वाली बुढ़िया का वाक़ेया है जिस के पढ़ने के बाद मालूम हो जाता है कि सादा और आसान दलील का मेयार क्या है।

सवालात

1. क्या उसूले दीन में तकलीद करना जायज़ है?
2. उसूले दीन पर किस तरह ईमान रखना चाहिये?
3. सादा और आसान दलील का क्या मतलब है?

चौथा सबक

खुदा की मारेफ़त फ़ितरी है

खुदा की मारेफ़त हासिल करना एक फ़ितरी अम्र है जो हर इंसान के अंदर पाया जाता है। फ़ितरी होने का मतलब यह है कि इंसान को यह सिखाया नहीं जाता कि कोई खुदा है जिसने इस दुनिया को बनाया है बल्कि अपने जमीर और फ़ितरत की तरफ़ मुतवज्जे होते ही वह यह जान लेता है कि किसी आलिम व कादिर ज़ात ने इस दुनिया को पैदा किया है, उस का दिल खुदा से आशना होता है और उस की रूह की गहराईयों से मारेफ़ते खुदा की आवाज़ें सुनाई देती हैं।

उलामा और दानिशवरों ने अपने इल्मी तजरुबों से यह साबित किया है कि अगर किसी बच्चे को पैदा होने के बाद किसी ऐसे दूर दराज़ इलाके में छोड़ दिया जाये जहाँ इंसानों का साया भी न पाया जाता हो, किसी तरह का कोई दीन या मज़हब मौजूद न हो तो जब यह बच्चा समझदार होगा तो खुद ब खुद वह उस ज़ात की तरफ़ मायल हो जायेगा जिसने इस दुनिया को पैदा किया है, हाँ यह मुमकिन है कि वह पहचान में ग़लती करते हुए किसी जानवर या पेड़ पौधे या दूसरी चीज़ों को खुदा समझ बैठे लेकिन उस के इस काम से यह बात ज़रूर साबित हो जाता है कि खुदा की मारेफ़त हासिल करना फ़ितरी है। इंसान की यह पाक फ़ितरत और वक़्त

और ज़्यादा जलवा नुमा होती है जब वह किसी बला या मुसीबत में फंस जाता है और निजात के सारे रास्ते बंद पाता है, ऐसी सूरत में उसे अपने अंदर एक आवाज़ सुनाई देती है कि अब भी एक ज़ात ऐसी है जो उसे इस मुसीबत से निजात दे सकती है। मिसाल के तौर पर कोई ऐसा शख्स जिस के बहुत से क़वी और खतरनाक जानी दुश्मन हैं जो उसे क़त्ल करना चाहते हैं उन्होंने अपने हथियारों को इस लिये तैयार कर रखा है कि उस के बदन को टुकड़े टुकड़े कर डालें। वह नहीं जानता कि वह दुश्मनों के हाथ लग जाये और वह उसे क़त्ल कर दें, ख़ौफ़ से न रातों को नींद आती है न दिन का चैन हासिल है और निजात की उम्मीदें हर तरफ़ से ख़त्म हो गई हैं, ऐसी सूरत में अगर कोई उस से सवाल करे कि क्या कोई निजात का रास्ता है? तो वह जवाब देगा कि अब ख़ुदा ही बचा सकता है।

एक शख्स ने इमाम जाफ़र सादिक (अ) से ख़ुदा के वुजूद के बारे में सवाल किया तो आप ने फ़रमाया: कभी कशती का सफ़र किया है। उसने जवाब दिया जी हाँ, फ़रमाया: क्या कभी ऐसा हुआ है कि तुम्हारी नाव डूबने लगी हो, तुम्हें तैरना न आता हो और बचने का कोई रास्ता न हो? जवाब दिया: जी हाँ। फ़रमाया क्या तुम्हारा दिल उस वक़्त किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ मुतवज्जे था जो उस वक़्त भी तुम्हें उस ख़ौफ़नाक मन्ज़र से निजात दे सके? जवाब दिया जी हाँ फ़रमाया: वह वही ख़ुदा है जो उस वक़्त भी निजात दे सकता है जब कोई निजात देने वाला न

हो और वही है जो उस वक़्त भी मदद कर सकता है जब कोई मददगार न हो।[१]
उसी पाक फ़ितरत की तरफ़ इशारा करते हुए ख़ुदा वंदे आलम कुरआने मजीद में
फ़रमाता है:

فطرة الله التي فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله

यह दीन वह फ़ितरते इलाही है जिस पर उसने इंसानो को पैदा किया है,
ख़िलक़ते ख़ुदा में कोई तब्दीली नही आ सकती। (सूरए रूम आयत ३०)

ख़ुलासा

-ख़ुदा की मारेफ़त के फ़ितरी होने के मतलब यह है कि इंसानों को यह सिखाया
नही जा सकता कि इस दुनिया का कोई पैदा करने वाला मौजूद है बल्कि उस की
रूह की गहराईयों से मारेफ़ते ख़ुदा की आवाज़ सुनाई देती है।

-इंसान की यह पाक फ़ितरत उस वक़्त और जलवा नुमा होती है जब वह किसी
बला मुसीबत में फंस जाता है और अपने लिये निजात के सारे रास्ते बंद पाता है,

ऐसी सू॒रत में उस की ज़मी॒र कहता है कि अब भी कोई ज़ात है जो उसे बचा सकती है और वह खुदा है।

सवालात

1. मारेफते खुदा के फ़ितरी होने का क्या मतलब है?
2. इंसान की यह पाक फ़ितरत किस वक़्त ज़्यादा जलवा नुमा होती है?
3. वुजूदे खुदा के बारे में सवाल करने वाले शख्स के जवाब में इमाम जाफ़र सादिक (अ) ने क्या फ़रमाया वाक़ेया नक़ल कीजिये?

[1].हक्कुल यक़ीन, शुब्बर, पेज ८

पाँचवा सबक

दुनिया का हैरत अंगेज़ निज़ाम और खुदा की मारेफ़त

हमारी निगाह जब किसी मुनज़ज़म और सजी हुई चीज़ पर पड़ती है तो फ़ौरन हमारे ज़ेहन में यह ख़्याल आता है कि ज़रूर कोई न कोई इस का नज़्म देने वाला है जिसने इस चीज़ को नज़्म दिया है। इसलिये कि हम यह जानते हैं कि खुद ब खुद या किसी हादसे (blast) के ज़रिये वुजूद में आने वाली चीज़ सजी हुई नहीं होती बल्कि वह हर तरह के नज़्म से दूर और बिखरी हुई होती है।

जब हम कूलर, टी वी, रेडियो, गाड़ी, फ़ोन, इंटरनेट और दीगर मशीनों के नज़्म पर नज़र डालते हैं तो क्या इस बात के कायल होते हैं कि यह तमाम चीज़ें और उनका नज़्म खुद ब खुद वुजूद में आ गया है? नहीं, हरगिज़ नहीं बल्कि अगर कोई ऐसा कह भी दे तो दूसरे उसका मज़ाक उड़ायेंगे, तो जब आप उन छोटी छोटी चीज़ों के बारे में यक़ीन नहीं कर सकते कि उन का नज़्म बग़ैर किसी नज़्म देने वाले के वुजूद में आया है तो क्या आप इस बात पर यक़ीन कर सकते हैं कि यह हैरत अंगेज़ दुनिया और उसका अजीब व ग़रीब निज़ाम बिना किसी नज़्म देने वाले के खुद ब खुद वुजूद में आ गया है?।

दानिशवर हज़रात इसी नज़्म में गौर व फ़िक्र करने के बाद हैरत अंगेज़ चीज़ों को ईजाद करते हैं, किसान भी इसी नज़्म की वजह से खेती की हरियाली का इंतेज़ार करता है, इसी नज़्म की बुनियाद पर बारिश के बारे में भविष्यवाणी की जाती है, न्यूट्रोन, प्रोटोन और इलेक्ट्रोन भी इसी नज़्म की वजह से अपनी धूरी पर धूम रहे हैं, दिन व रात इसी नज़्म की नतीजा हैं, चमकते तारे, हरे भरे पेड़, चाँद, सूरज, दरिया..... सब के सब इसी नज़्म की वजह से मौजूद हैं, गोया दुनिया का पूरा निज़ाम एक खास नज़्म के तहत है और अगर यह नज़्म न हो तो फिर कुछ न हो।

यही वजह है कि काफ़िर और नास्तिक दानिशवर भी जैसे जैसे दुनिया के नज़्म के सिलसिले में तहक़ीकात करते जाते हैं उनके दिल में ईमान की किरण फूटती रहती है और वह लोग वुजूदे खुदा के कायल होते जाते हैं।

लापस नुज़ूमी (astronomer) कहता है कि मुम्किन नहीं है कि मंज़ूम ए शम्सी के बारे में यह कहा जाये कि यह खुद ब खुद blast के ज़रिये वुजूद में आया है, बल्कि ऐतेराफ़ करना पड़ेगा कि एक ज़ात (खुदा) है जिसने यह नज़्म पैदा किया है।[१]

न्यूटन कहता है कि कान की बनावट से हमें समझ में आता है कि उसका बनाने वाला आवाज़ के तमाम क्वानीन से आशाना था और आँख को देख कर मालूम होता है कि उसे पैदा करने वाला नूर और रौशनी के पेचीदा और मुश्किल कानूनों को जानता था।[२]

दुनिया के इस हैरत अंगेज़ नज़्म के सिलसिले में कुरआने मजीद में इरशाद होता है:

وخلق كل شى فقدره تقديرا

(खुदा वंदे आलम) ने हर चीज़ को पैदा किया और उस के लिये एक खास नज़्म और अंदाज़ा बनाया है। (सूरह फुरक़ान आयत २)

खुलासा

- जब हम किसी सजी हुई चीज़ को देखते हैं तो फ़ौरन समझ जाते हैं कि ज़रूर कोई न कोई है जिसने उसे सजाया है। लिहाज़ा यह पूरी दुनिया और उसका

निज़ाम हैरत अंगेज़ नज़्म बगैर किसी नज़्म देने वाले या सजाने वाले के वुजूद में नहीं आ सकता और वह नज़्म देने वाला खुदा वंदे आलम है।

- बड़े बड़े दानिशवरों ने भी अपनी तहकीकात के बाद खुदा के वुजूद का ऐतेराफ़ किया है। न्यूटन कहता है कि कान की बनावट से समझ में आता है कि उस का बनाने वाला आवाज़ के तमाम क़वानीन से आशाना था और आँख को देख कर मालूम होता है कि उसे पैदा करने वाला नूर और रौशनी के पेचीदा और मुश्किल क़वानीन से वाकिफ़ था।

सवालात

1. यह दुनिया और उसका हैरत अंगेज़ निज़ाम खुद ब खुद वुजूद में क्यों नहीं आ सकता?
2. लापस नुज़ूमी (astronomer) ने इस दुनिया के नज़्म के बारे में क्या कहा है?

[1]. सुखनी दर बारए खुदा पेज ५४

[2]. आफ़रिदगारे जहान पेज २२५

छठा सबक

तौहीद और उस की दलीलें

तौहीद यानी खुदा की वहदानियत कायल होना और उसे एक मानना। तौहीद के मुकाबले में शिक्र का इस्तेमाल होता है जिस का मतलब खुदा वंदे आलम के कामों में किसी को शरीक मानना या बहुत से खुदाओं को मानना। नबियों की दावत और उसूले दीन की पहली बुनियाद यही 'तौहीद' है। तौहीद को न मान कर शिक्र को मानना कुरआने मजीद की नज़र में अज़ीम जुल्म है:

ان الشّرك لظلم عظیم

बेशक शिक्र बहुत बड़ा जुल्म है। (सुरह लुक़्मान आयत 13)

अल्लाह के एक होने की दलीलें १. जब आप पेन्टिंग (painting) की किसी नुमाईशगाह में जाते हैं तो आप की नज़र एक ऐसी पेंटिंग पर पड़ती है जो बहुत खूब सूरत और अनोखी है, जब आप उसके और करीब जाते हैं तो देखते हैं कि उसमें एक ही तरह का नज़म पाया जाता है और उसका हर कोना दूसरे से मिलता जुलता है और किसी तरह का इख़्तिलाफ़ उस के अंदर मौजूद नहीं है तो आप यक़ीन कर लेते हैं कि उस का बनाने वाला कोई एक शख्स है जिसने उसमें अपना

हुनर दिखाया है और यह खूब सूत पेंटिंग वुजूद में आ गई। इस लिये कि अगर उसके बनाने वाले एक से ज़्यादा होते तो कहीं कहीं उस में इख़्तिलाफ़ वुजूद में आ ही जाता।

यह दुनिया भी ऐसी ही एक अज़ीम पेंटिंग हैं जिस का बनाने वाला खुद खुदा है और चूँकि इस दुनिया में एक ही निज़ाम पाया जाता है लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि खुदा भी एक है जिसने इस निज़ाम को कायम किया है। दानिशवरों का भी यह कहना है कि दुनिया एक ही निज़ाम के तहत चल रही है।

हिशाम बिन हकम ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ) से सवाल किया: खुदा के एक होने की दलील क्या है?

फ़रमाया: दुनिया की चीज़ों का एक दूसरे से जुड़े होना और मखलूक़ात का कामिल होना खुदा के एक होने की दलील है।[१] इस हदीस में इमाम (अ) ने दुनिया पर एक ही निज़ाम के हाकिम होने को ही खुदा की वहदानियत की दलील बताया है।

2.अल्लाह के एक होने की दूसरी दलील यह है कि जितने भी नबी आये, सब ने एक खुदा की तरफ़ दावत दी और किसी ने भी यह नहीं कहा कि हम किसी दूसरे खुदा की तरफ़ से आये हैं। हर नबी ने अपने बाद आने वाले नबी के बारे में खबर दी है, हज़रत मूसा (अ) ने हज़रत ईसा (अ) और हज़रत ईसा (अ) ने पैग़म्बरे इस्लाम (स) के बारे में खबर दी है जिस से मालूम होता है कि नबुव्वत का सारा सिलसिला एक ही खुदा पर खत्म होता है और अगर बहुत से खुदा होते तो मूसा (अ) कहते कि मैं किसी और खुदा की तरफ़ से आया हूँ, ईसा (अ) कहते कि मैं किसी और खुदा की तरफ़ से आया हूँ, इसी तरह पैग़म्बरे अकरम (स) कहते कि मेरा खुदा मूसा और ईसा के खुदा से अलग है।

इन दो दलीलों के अलावा भी बहुत सी दलीलें बड़ी किताबों में मौजूद हैं जिन से मालूम होता है कि खुदा सिर्फ़ एक है।

खुलासा

-तौहीद यानी खुदा को एक मानना, तौहीद के मुक़ाबले में शिर्क है जो कुरआने करीम की नज़र में अज़ीम जुल्म है।

-कायनात में एक ही निज़ाम की हुक्मरानी इस बात की दलील है कि जिस खुदा ने यह निज़ाम कायम किया है वह भी एक है।

-अल्लाह के एक होने की दूसरी दलील यह है कि सारे नबी इसी बात के दावेदार थे कि हम एक ही खुदा की तरफ़ से भेजे गये हैं।

सवालात

- 1.तौहीद का क्या मतलब है?
- 2.पूरी कायनात में एक ही निज़ाम का हाकिम होना किस बात की दलील है? कैसे?
- 3.क्या सारे नबियों के खुदा अलग अलग थे?

[1]. तौहीदे शेख सदूक पेज २५०

सातवाँ सबक

तौहीद की क्रिस्में

हमारे उलामा ने तौहीद की चार क्रिस्में बयान की हैं:

1. तौहीदे ज़ात
2. तौहीदे सिफ़ात
3. तौहीदे अफ़आल
4. तौहीद इबादत

1. तौहीदे ज़ात: अभी तक जो हमने तौहीद के बारे में पढ़ा है वह तौहीदे ज़ात ही है। तौहीदे ज़ात का मतलब यह है कि खुदा की ज़ात एक है और उस का कोई शरीक नहीं है, न उस को किसी ने पैदा किया है और न ही वह किसी का बाप या माँ है, न वह किसी दूसरे का जुज़ है और न कोई दूसरा उस की जुज़ है यानी वह किसी चीज़ से मिल कर नहीं बना है।

2. तौहीद सिफ़ात: तौहीद सिफ़ात का मतलब यह है कि खुदा की सिफ़ात एने ज़ात हैं यानी उस की सिफ़ात और उसकी ज़ात जो अलग अलग चीज़ें नहीं हैं, ऐसा नहीं है कि खुदा की ज़ात अलग है और उस की कुदरत अलग है या खुदा की ज़ात

अलग है और उसका इल्म अलग है बल्कि सही तो यह है कि खुदा ही इल्म है और खुदा ही कुदरत है।

3. तौहीद अफ़आल: तौहीदे अफ़आल का मतलब यह है कि दुनिया में जितने भी काम अंजाम पाते हैं वह खुदा वंदे आलम से मुतअल्लिक होते हैं। इंसानों का खाना पीना, उनकी साँसों का आना जाना, सूरज का निकलना और डूबना, चाँद का चमकना, जानवरों का चलना फिरना, नदियों का बहना, तारों का चमकना, यह सब कुछ हकीकत में अल्लाह के काम हैं, इंसान भी अपने कामों में खुदा का मोहताज है। मिसाल के तौर पर जब हम एक बल्ब को चलता हुआ देखते हैं तो समझते हैं कि यह उस की अपनी बिजली है लेकिन गौर करने के बाद मालूम होता है कि उस बल्ब की निस्बत बिजली घर से है उसी वजह से यह रौशनी दे रहा है यानी अगर बिजली घर न होता तो बल्ब बिजली देने की सलाहियत नहीं के बावजूद रौशनी न दे पाता। इसी तरह अगर इंसान या दूसरे जानदारों को खुदा की तरफ़ से ताक़त (power) न मिलती तो वह अपने काम को अंजाम नहीं दे सकते थे। लेकिन चूँकि खुदा ने कुदरत व ताक़त के साथ इंसान को इख्तियार भी दिया है लिहाज़ा यह नहीं कहा जा सकता कि अगर इंसान ने गुनाह अंजाम दिया है तो वह खुदा ने अँजाम दिया है और वह गुनाह करने वाला सज़ा का हक़दार नहीं है। इसलिये कि जब खुदा ने उसे इख्तियार दिया है तो सज़ा देने का हक़ भी रखता है

और वह हम से यह सवाल कर सकता है कि जब तुम गुनाह पर मजबूर न थे तो तुमने उसे क्यों अंजाम दिया?

4. तौहीदे इबादत: तौहीदे इबादत का मतलब यह है कि इबादत सिर्फ हकीकी खुदा यानी अल्लाह की करनी चाहिये क्योंकि सिर्फ वही इबादत के लायक है और सिर्फ वह ही ऐसी सिफ़ात व कमालात का हामिल है जिन की वजह से उस की इबादत की जा सकती है।

खुलासा

-तौहीद की चार किस्में हैं:

1. तौहीदे ज़ात: यानी खुदा एक है और कोई उस का शरीक नहीं है।
2. तौहीदे सिफ़ात: यानी खुदा की ज़ात उस की सिफ़ात से जुदा नहीं हैं।
3. तौहीद अफ़आल: यानी दुनिया में जो भी काम होता है सब की निस्बत खुदा की तरफ़ है लेकिन यहाँ यह नहीं कहा जा सकता कि अगर इंसान गुनाह कर रहा है तो वह खुदा का काम है। इस लिये कि खुदा ने इंसान को इख्तियार दो कर भेजा है।
4. तौहीदे इबादत: यानी इबादत के लायक सिर्फ़ खुदा वंदे आलम है।

सवालात

1. तौहीद की किस्मों को मुख्तसर वज़ाहत के साथ बयान करें?
2. तौहीदे अफ़आल की वजह से यह कहना सही है कि अगर इंसान कोई गुनाह करे तो वह खुदा ने किया है? क्यों?

आठवाँ सबक़

तौहीद के फ़ायदे

यह बात मुसल्लम है कि अक्रीदा इंसान पर अपना असर छोड़ता है, अगर अक्रीदा बुरा है तो असर भी बुरा होगा और अगर अक्रीदा अच्छा है तो असर भी अच्छा होगा। तौहीद भी एक ऐसा अक्रीदा है जो मुख्तलिफ़ जेहतों से हमारी ज़िन्दगी पर नेक और अच्छे असरात ज़ाहिर करता है। किताबों में खुदा पर ईमान रखने के बहुत से फ़ायदे बयान किये गये हैं जिन में से बाज़ यहाँ ज़िक्र किये जा रहे हैं:

1. गुनाहों से बचना

जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता है वह तमाम हालात में अल्लाह को हाज़िर व नाज़िर जानता है जिस की वजह से वह खुदा वंदे आलम से शर्म करता है और गुनाह करने से बचता है नतीजे में उस की इंफ़ेरादी और समाजी ज़िन्दगी भी बेहतरीन, सालिम और खुदा पसंद हो जाती है।

2. तंहाई का अहसास न करना

इंसान एक समाजी मखलूक है जो दूसरों के बग़ैर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता और समाज से दूर रह कर तंहाई को इख़्तियार कर लेना उस की फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। यकीनन उसे कोई अपना चाहिये जो उस का हमदम और हमेशा साथ रहने वाला हो। खुदा से बढ़ कर कौन अपना और हमेशा साथ रहने वाला हो सकता है इस लिये कि करीब से करीब तरीन शख्स भी हर वक़्त इंसान के साथ नहीं रह सकता लेकिन खुदा सिर्फ़ ज़िन्दगी ही में नहीं बल्कि मौत के बाद भी उस के साथ है। लिहाज़ा अगर कोई खुदा पर ईमान रखे तो उसे किसी तरह की तंहाई का अहसास नहीं सतायेगा और वह हमेशा यह कहता हुआ नज़र आयेगा कि कोई नहीं तो खुदा तो है।

3. ज़िन्दगी के मक़सद से वाकिफ़ होना

ख़ुदा पर ईमान के ज़रिये इंसान अपने मक़सद की पहचान हासिल कर लेता है, जब वह जान लेता है कि ख़ुदा ने हमें पैदा किया है और ख़ुदा कोई काम बे मक़सद अंजाम नहीं देता लिहाज़ा उसने हमें भी बे मक़सद पैदा नहीं किया है बल्कि ज़रूर किया हदफ़ व मक़सद के लिये पैदा किया है और वह हदफ़ व मक़सद उस की इताअत व बंदगी है तो वह अपनी ज़िम्मेदारी को भी पहचान लेता है, हर काम ख़ुदा से करीब होने के लिये अंजाम देता है, उस की इताअत करता है और यही उस की ज़िन्दगी का मक़सद है जिस को वह ख़ुदा पर ईमान के ज़रिये पहचान लेता है।

4. नेक कामों से न थकना

अगर सिर्फ़ लोगों को ख़ुश करने के लिये नेक काम किया जाये तो अकसर देखने में आता है कि लोग उस की कद्र नहीं करते, जब तक फ़ायदा होता रहता है लोग उस के पीछे पीछे रहते हैं और जब फ़ायदा ख़त्म हो जाता है तो उस की नेकियों को भूल कर उस के दुश्मन हो जाते हैं नतीजे में वह शख्स मायूस हो कर

नेक काम करना भूल जाता है। इसी लिये यह मुहावरा बन गया है कि “नेक कर दरिया में डाल’ ’ लेकिन अगर कोई शख्स खुदा पर ईमान रखे और सिर्फ उस को खुश करने के लिये काम अंजाम दे तो लोगों की बुराईयों और उन की दुश्मनी से कभी मायूस नहीं होगा और नेक काम करने से कभी नहीं थकेगा। इसलिये कि उसे यकीन है कि मेरा अमल का असली ईनाम तो आदिल खुदा देगा जिस के यहाँ ज़रा बराबर अमल भी बर्बाद नहीं जाता। कुरआने मजीद में इरशाद होता है:

فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره

जो ज़रा बराबर भी नेकी करेगा उस की जज़ा पायेगा।

(सूर ए ज़िलज़ाल आयत १०)

खुदा पर ईमान रखने वाले कभी नहीं कहते कि “नेकी कर दरिया में डाल’ ’ बल्कि वह यह कहते हुए नज़र आते हैं कि नेकी करो और आखिरत के पूँजी जमा करो।

खुलासा

-अक्रीदा इंसान पर अपना असर छोड़ता है, अक्रीद ए तौहीद के भी बहुत से फ़ायदे हैं जो इंसानी ज़िन्दगी में पायह जाते हैं जिन में कुछ यह हैं:

1. गुनाहों से बचना।
2. तंहाई का अहसास न करना।
3. ज़िन्दगी के मक़सद से वाक़िफ़ होना।
4. नेक कामों से न थकना।

सवालात

1. इंसान ख़ुदा पर ईमान के ज़रिये किस तरह गुनाहों से बच सकता है?
2. ख़ुदा पर ईमान रखने वाला नेक कामों से क्यो नही थकता?

नवा सबक़

सिफ़ाते सुबूतिया

सिफ़ाते खुदा की दो किस्में हैं: सिफ़ाते सुबूतिया और सिफ़ात सल्बिया। इस सबक में हम सिफ़ाते सुबूतिया के बारे में पढ़ेंगे। सिफ़ाते सुबूतिया उन सिफ़ातों को कहते हैं जो खुदा में पाई जाती हैं और वह आठ हैं:

1. खुदा अज़ली व अबदी है: अज़ली है यानी उस की कोई इब्तिदा नहीं है बल्कि हमेशा से है और अबदी है यानी उस की कोई इन्तिहा नहीं है बल्कि वह हमेशा रहेगा और कभी नाबूद नहीं होगा।

2. खुदा क़ादिर व मुख्तार है: खुदा क़ादिर है यानी हर चीज़ पर कुदरत रखता है और वह मुख्तार है यानी अपने कामों को अपने इरादे और इख्तियार से अंजाम देता है और कोई उसे मजबूर नहीं कर सकता।

3. खुदा आलिम है: खुदा वंदे आलम तमाम चीज़ों के बारे में कामिल तौर पर जानता है और वह हर चीज़ से वाकिफ़ है, जिस तरह वह किसी चीज़ के वुजूद में आने के बाद उसे जानता है उसी तरह वुजूद में आने से पहले जानता है।

4. खुदा मुदरिक है: यानी वह हर चीज़ को समझता है, वह कान नहीं रखता लेकिन तमाम बातों को सुनता है, आँख नहीं रखता लेकिन तमाम चीज़ों को देखता है।

5. खुदा हई है: यानी वह हयात रखता है और ज़िन्दा है।

6. खुदा मुरीद है: यानी वह कामों की मसलहत से आगाह है वह वही काम अंजाम देता है जिस में मसलहत हो और कोई भी काम अपने इरादे और मसलहत के बगैर अंजाम नहीं देता।

7. खुदा मुतकल्लिम है: यानी वह कलाम करता है लेकिन ज़बान से नहीं बल्कि दूसरी चीज़ों में बोलने की कुदरत पैदा कर देता है और फ़रिश्तों या अपने वलियों से हम कलाम होता है। जैसा कि उस ने पेड़ में कुदरते कलाम पैदा की और हज़रत मूसा (अ) से बात की, इसी तरह वह आसमान को बोलने की ताक़त देता है तो फ़रिश्ते सुनते हैं और वहयी लेकर नाज़िल होते हैं।

8. खुदा सादिक़ है: यानी वह सच्चा है और झूठ नहीं बोलता। इस लिये कि झूठ बोलना अक़ल की नज़र से एक बुरा काम है और खुदा बुरा काम अंजाम नहीं देता।

तमाम सिफ़ाते सुबूतिया की मज़बूत और मोहकम दलीलें बड़ी किताबों में मौजूद हैं जिन से यह मालूम होता है कि अल्लाह तआला क्यों अज़ली, अबदी, कादिर व मुख़्तार, आलिम, मुदरिक्, हई, मुरीद, मुतकल्लिम और सादिक़ है।

ख़ुलासा

-सिफ़ाते ख़ुदा की दो किस्में हैं:

1. सिफ़ाते सुबूतिया

2. सिफ़ाते सल्बिया

-सिफ़ाते सुबूतिया उन सिफ़ात को कहते हैं जो ख़ुदा में पाई जाती हैं और वह सिफ़ात आठ हैं:

1.अज़ली व अबदी

2.कादिर व मुख्तार

3.आलिम

4.मुदरिक

5.हई

6. मुरीद

7. मुतकल्लिम

8. सादिक

सवालात

1. सिफ़ाते सुबूतिया की तारीफ़ बयान करें?
2. ख़ुदा के मुदरिफ़, हई और मुरीद होने का क्या मतलब है?
3. ख़ुदा के अज़ली व अबदी होने के क्या मअना हैं?

दसवाँ सबक

सिफ़ाते सल्बिया

पिछले सबक में हमने पढ़ा कि ख़ुदा की सिफ़ात की दो किस्में हैं: सिफ़ाते सुबूतिया और सिफ़ाते सल्बिया। हम सिफ़ाते सल्बिया के बारे में आशनाई हासिल कर चुके और अब हम इस सबक में सिफ़ाते सल्बिया के बारे में पढ़ेंगे।

सिफ़ाते सल्बिया उन सिफ़ातों को कहते हैं जिन में ऐब व कमी और बुराई के मअना पाये जाते हैं। ख़ुदा वंदे आलम इस तरह के तमाम सिफ़ात से दूर है और उस में यह सिफ़ातें नहीं पाई जाती हैं। आम तौर पर हमारे उलामा सात सिफ़ाते सल्बिया को बयान करते हैं:

1. ख़ुदा शरीक नहीं रखता: यानी ख़ुदा वाहिद है, कोई ख़ुदा के बराबर और उस के जैसा नहीं है, वह वाहिद है और अपने तमाम कामों को तन्हा अंजाम देता है। सिर्फ़ वही इबादत के लायक और सब का पैदा करने वाला है।

2. ख़ुदा मुरक्कब नहीं है: यानी वह कई चीज़ों से मिल कर नहीं बना है, न वह किसी का जुज़ है और न कोई दूसरा उस का जुज़ है वह मिट्टी, पानी, आग, हवा, हाथ, पैर, आँख, नाक, कान या दूसरी चीज़ से मिल कर नहीं बना है।

3. खुदा जिस्म नही रखता: जिस्म उस चीज़ को कहते हैं जिस में लम्बाई, चौड़ाई और गहराई पाई जाती हो। लम्बाई, चौड़ाई और गहराई महदूद होती है लेकिन खुदा वंदे आलम ला महदूद है और उस की कोई हद नही है लिहाज़ा उस की लम्बाई, चौड़ाई या गहराई का तसव्वुर नही किया जा सकता।

4. खुदा दिखाई नही देता: न वह दुनिया में दिखाई देता है और न आखिरत में दिखाई देगा। इस लिये कि वह चीज़ दिखाई देती है जो जिस्म रखती हो लेकिन हम जानते हैं कि खुदा जिस्म नही रखता।

5. खुदा पर हालात तारी नही होते: यानी उस में भूल, नींद, थकन, लज़ज़त, दर्द, बीमारी, जवानी, बुढ़ापा और उन जैसी दूसरी हालतें नही पाई जाती हैं इस लिये कि ऐसी चीज़ें ऐब और कमी है और खुदा तरह के ऐब से पाक है।

6. खुदा मकान नही रखता: यानी खुदा हर जगह है इस लिये कि वह ला महदूद है, उस की कोई हद नही है, मकान वह रखता है जो महदूद हो।

7. खुदा मोहताज नही है: यानी खुदा हर चीज़ से बेनियाज़ है, न वह अपनी ज़ात में किसी का मोहताज है और न सिफ़ात में। उलामा ने बड़ी किताबों में सिफ़ाते सुबूतिया की तरह सिफ़ाते सल्बिया की भी मज़बूत दलीलें बयान की हैं जिन को पढ़ने के बाद यह मालूम हो जाता है कि खुदा वंदे आलम के अंदर सिफ़ाते सल्बिया क्यो नही पाई जाती है।

खुलासा

-सिफ़ाते सल्बिया उन सिफ़तों को कहते हैं जिन में ऐब व नक्स और बुराईयों के मअना पाये जाते हैं और खुदा उन तमाम सिफ़तों से पाक है।

-सिफ़ाते सल्बिया सात है:

1. खुदा शरीक नहीं रखता।
2. मुरक्कब नहीं है।
3. जिस्म नहीं रखता।
4. दिखाई नहीं देता।
5. उस पर हालात तारी नहीं होते।
6. वह मकान नहीं रखता।
7. वह किसी का मोहताज नहीं है।

सवालात

1. सिफ़ाते सल्बिया की तारीफ़ बयान करें?

2. कम से कम पाँच सिफ़ात सल्बिया लिखें?
3. खुदा जिस्म क्यो नही रखता?
4. खुदा पर किस तरह के हालात तारी नही होते?

ग्यारहवाँ सबक

अद्ल

उसूले दीन में अद्ल को तौहीद के बाद शुमार किया जाता है। अद्ल से मुराद यह है कि अल्लाह आदिल (इंसाफ़ वाला) है और किसी पर जुल्म नही करता। खुदा वंदे आलम अद्ल, नबुव्वत, इमामत, क़यामत, जज़ा (ईनाम) व सज़ा, अहकाम की हिकमतों और तमाम कामों से मुतअल्लिक है लिहाज़ा अगर खुदा के अदल को न माना जाये को बहुत से इस्लामी मसायल हल नही हो पायेगें।

अदले खुदा का मतलब

अदले खुदा के बहुत से मअना बयान हुए हैं जिन में से बाज़ यह हैं:

1. खुदा आदिल है यानी वह हर ऐसे काम से पाक है जो मसलहत और हिकमत के बर खिलाफ हो।

2. खुदा आदिल है यानी उस की बारगाह में तमाम इंसान बराबर हैं और अमीर गरीब, गोरे काले, आलिम जाहिल, वगैरह सब एक जैसे हैं, बड़ाई का पैमाना और मेयार सिर्फ तक्वा और परहेज़गारी है। क्यो कि कुरआने मजीद में इरशाद होता है:

ان اكرمكم عندالله اتقاكم

बेशक खुदा के नज़दीक तुम में से सब से ज़्यादा इज़्ज़त और फ़ज़ीलत वाला वह है जो सब से ज़्यादा मुत्क़ी (परहेज़गार) हो। (सूर ए हुजरात आयत १३)

3. खुदा आदिल है यानी किसी के ज़र्रा बराबर अमल को भी बेकार नहीं जाने देता। कुरआने मजीद में इरशाद है: فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره

जो ज़र्रा बराबर भी नेकी करेगा उस की जज़ा (इनाम) पायेगा और जो ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा उस की सज़ा पायहगा।

अदले खुदा की दलील

खुदा आदिल है और वह जुल्म नहीं करता। इस लियह कि जुल्म एक बुरा काम और ऐब है और खुदा हर ऐब से पाक है, दूसरी बात यह कि जुल्म करने के बहुत से सबब (कारण) होते हैं जिन में से एक भी खुदा में नहीं पाया जाता और वह असबाब (कारण) यह हैं:

1. जिहालत: जुल्म वह करता है जो उस की बुराई को न जानता हो जब कि खुदा हर चीज़ के बारे में जानता है।

2. ज़रूरत: जुल्म वह करता है जो किसी चीज़ का मोहताज हो और उस चीज़ को हासिल करने के लियह उसे जुल्म का सहारा लेना पड़े। लेकिन खुदा किसी चीज़ का मोहताज नहीं है।

3. आजिज़ी: जुल्म वह करता है जो खुद से किसी खतरे को टालने में बेबस हो और आखिर कार उसे जुल्म का सहारा लेना पड़े। लेकिन खुद आजिज़ और बेबस नहीं है बल्कि हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

4. बद अखलाक़ी: जुल्म वह करता है जो बुरा अखलाक़ रखता हो और अपने दिल में किसी की दुश्मनी लिये बैठा हो या किसी से जलता हो लेकिन खुदा इन सब बुराईयों से पाक है।

इन ही चार असबाब में से किसी एक सबब की बुनियाद पर दुनिया में जुल्म होते हैं लेकिन खुदा वंदे आलम में इन में से एक सबब भी नहीं पाया जाता लिहाज़ा साबित हो जाता है कि खुदा वंदे आलम ज़ालिम नहीं बल्कि आदिल (इंसाफ़ वाला) है।

खुलासा

-अल्लाह तआला आदिल (न्याय प्रिय) है और किसी पर जुल्म नहीं करता।

-खुदा के अद्ल का मतलब यह है कि वह तमाम काम मसलहत व हिकमत की बुनियाद पर करता है, उस की नज़र में सारे इंसान बराबर है।

-दुनिया में जुल्म के चार असबाब हैं: जिहालत, ज़रूरत, आजिज़ी (बेबसी), बद अखलाक़ी, लेकिन खुदा वंदे आलम में इन में से कोई एक सबब भी नहीं पाया जाता लिहाज़ा साबित हो जाता है कि खुदा आदिल (इंसाफ़ वाला) है।

सवालात

1. अदले ख़ुदा के कम से कम दो मअना बयान करें?
2. अदले ख़ुदा की क्या दलील है?

बारहवाँ सबक

नबुव्वत

खुदा की तरफ़ से भेजे गये नबियों की नबुव्वत और रिसालत पर अक़ीदा और ईमान रखना भी उसूले दीन में से एक है, अल्लाह के नबी लोगों की हिदायत और रहनुमाई के लिये भेजे गये हैं। उनकी तादाद एक लाख चौबीस हज़ार है, उनमें से आखिरी नबी पैग़म्बरे इस्लाम (स) है जिन के बाद नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो गया है।

नबी की ज़रूरत

हम सब जानते हैं कि खुदा ने इस फैली हुई दुनिया को बे मक़सद पैदा नहीं किया है और यह भी वाज़ेह है कि इंसान को पैदा करने से खुदा को कोई फ़ायदा नहीं पहुचता है। इस लिये कि हम पिछले सबकों में पढ़ चुके हैं कि खुदा किसी चीज़ को मोहताज नहीं है लिहाज़ा इंसान को पैदा करने का मक़सद और उस का फ़ायदा इंसान को ही मिलता है और वह फ़ायदा व मक़सद यह है कि तमाम

मौजूदात अपने कमाल की मंज़िलों को तय करे। खास तौर पर इंसान हर लिहाज़ से कमाल तक पहुच सके।

लेकिन यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि इंसान किस तरह और किस के सहारे से हर लिहाज़ से अपने कमाल की मंज़िलें तय कर सकता है?

वाज़ेह है कि इंसान उसी वक़्त अपने कमाल तक पहुच सकता है जब उसे आसमानी क़वानीन और सही तरबीयत करने वाले के ज़रिये सहारा मिले, उस के बग़ैर इंसान के लियेह मुम्किन न होगा कि वह कमाल तक पहुचे। इस लिये कि ग़ैर आसमानी रहबर अपनी अक़ल और समझ के महदूद होने की वजह से सही तौर पर इंसान की रहनुमाई नही कर सकता और चुँ कि वह भूल चूक और ग़लतियों से महफ़ूज़ नही होता लिहाज़ा रहबरी के लायक भी नही है। (मगर यह कि वह आसमानी रहबरों की पैरवी करे।)

लेकिन अल्लाह के नुमाइंदे (दूत) ग़ैब की दुनिया से राबता और हर तरह की खता व ग़लती से महफ़ूज़ होने की वजह से इंसान को हकीकी कमाल और खुशियों तक पहुचा सकते हैं।

इन सब बातों का नतीजा यह हुआ कि इंसान की हिदायत व तरबीयत उस पैदा करने वाले की तरफ से होना चाहिये जो उस की तमाम ख्वाहिशों से वाकिफ है और यह भी जानता है कि कौन सी चीज़ इंसान के लिये नुक़सान का सबब है और कौन सी चीज़ उस के फ़ायदे का सबब है और यह इलाही क़वानीन भी खुदा के उन नबियों के ज़रिये ही लागू होने चाहिये। जो हर तरह की ख़ता और ग़लतियों से महफूज़ होते हैं।

इंसान एक समाजी मखलूक है

सभी का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि इंसान एक समाजी मखलूक है यानी किसी कोने में अकेला बैठ कर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता बल्कि वह मजबूर है कि दूसरे इंसानों के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे, इसी को समाजी ज़िन्दगी कहते हैं। अकसर इंसान नफ़सानी ख्वाहिशों की वजह से इख़्तिलाफ़ात और ग़ैर आदिलाना कामों में फँस जाता है। अब अगर सही और आदिलाना क़ानून न हो तो यह समाज और मुआशरा हरगिज़ कमाल और सआदत की राह पर नहीं जा सकता।

लिहाज़ा वाज़ेह हो जाता है कि एक ऐसा सही और आदिलाना क़ानून लाज़िम व ज़रूरी है जो शख़्सी और समाजी हुकूक की हिफ़ाज़त करे लेकिन सवाल यह पैदा

होता है कि यह क़ानून कौन बनाये? बेहतर क़ानून बनाने वाला कौन है? उस की शर्तें क्या हैं?

क़ानून बनाने वाले की पहली शर्त यह है कि वह जिनके लिये क़ानून बनाना चाहता है उन की रूहानी और जिस्मानी ख़ुसूसियात और ख़्वाहिशात वगैरह से आगाह हो, हम जानते हैं कि ज़ाते ख़ुदा के अलावा कोई और नहीं जो इंसान के मुस्तक़बिल में होने वाले उन हादसों से आगाह हो, जो समाज को एक मुश्किल में तब्दील कर देते हैं लिहाज़ा सिर्फ़ उसी को हक़ है कि इंसान के लिये ऐसा क़ानून बना यह जो उसकी पूरी ज़िन्दगी में फ़ायदे मंद साबित हो और उसे नाबूदी से निजात दे। ख़ुदा उन क़वानीन को इंसान तक अपने बुलंद मर्तबे, मुम्ताज़ और ख़ता व लगज़िश से मासूम मुन्तख़ब बंदों के ज़रिये पहुँचाता है ताकि इंसान उन क़वानीन की मदद से कमाल तक पहुँचे।

इंसानों की रहबरी में पैग़म्बरों का दूसरा अहम किरदार यह है कि वह ख़ुद सबसे पहले क़ानून पर अमल करते हैं यानी वह उन क़वानीन के बारे में इंसान के लिये ख़ुद नमून ए अमल होते हैं ताकि दूसरे अफ़राद भी उनकी पैरवी करते हुए ख़ुदा के नाज़िल किये गये क़वानीन को अपनी ज़िन्दगी में लागू करें, यही वजह है कि हर मुसलमान का अक़ीदा है कि ख़ुदा ने हर ज़माने में एक या चंद पैग़म्बरों को भेजा

है ताकि आसमानी तालीम व तरबियत के ज़रिये इंसानों को कमाल व सआदत की मंज़िलों तक पहुँचाये।

एक शख्स ने इमाम सादिक (अ) से सवाल किया: पैगम्बरों के आने का सबब क्या है? इमाम ने उसके जवाब में फ़रमाया: जब मोहकम और कतई दलीलों से साबित हो गया कि एक हकीम खुदा है जिसने हमें वुजूद बख़्शा है जो जिस्म व जिस्मानियात से पाक है, जिसको कोई भी देख नहीं सकता तो उस सूरत में ज़रूरी है कि उसकी तरफ़ से कुछ रसूल और पैगम्बर हों जो लोगों को खैर और सआदत की तरफ़ हिदायत करें और जो चीज़ उनके ज़रर व नुकसान का सबब है उससे आगाह करें। ऐसे आसमानी हादी व रहबर से ज़मीन कभी ख़ाली नहीं रह सकती।

[१]

खुलासा

- तमाम नबियों की नबुव्वत और रिसालत पर ऐतेकाद रखना उसूले दीन में से है ।

- खुदा वंदे आलम ने जिन असबाब की खातिर पैगम्बरों को भेजा है वह यह हैं:

1. इंसान कमाल की मंज़िलों तक पहुँचे।
2. इंसानों के लिये पैग़म्बर नमून ए अमल बनें।
3. इंसानों की सही हिदायत व रहनुमाई हो सके।

- सिर्फ़ खुदा ही को हक़ है कि वह इंसानों के लियह क़ानून बनाये। इस लियह कि उसी ने उन्हे पैदा किया है और वही उन की रुहानी व जिस्मानी हालात, ख़्वाहिशों, उन की पिछली, हाल की और आईन्दा की ज़िन्दगी और सारे हालात के बारे में पूरी तरह से जानता है।

- खुदा अपने बनाये हुए क़ानून को अपने ख़ास बंदों के ज़रिये इंसानों तक पहुँचाता है जो बुलंद मर्तबा, मुम्ताज़ और ख़ता व ग़लतियों से महफूज़ और मासूम होते हैं।

सवालात

1. क्या नबियों की नबुव्वत व रिसालत पर ऐतेकाद रखना उसूले दीन में से है?
2. हमें नबियों की ज़रूरत क्यों है और खुदा ने उन्हें क्यों भेजा है?
3. सिर्फ़ खुदा ही को इंसानों के लिये क़ानून बनाने का हक़ है?
4. खुदा अपने बनाये क़ानून को किन लोगों के ज़रिये इंसानों तक पहुँचाता है?

[1]. उसूले काफ़ी जिल्द २ पेज १६८

तेरहवाँ सबक़

नबियों का मासूम होना

हम पिछले सबक़ में पढ़ चुके हैं कि नबियों के आने का मक़सद लोगों की हिदायत व रहबरी है और यह बात भी अपनी जगह मुसल्लम है कि अगर खुद रहबर और हादी गुनाहों में फंसे हों तो वह अपनी क़ौम की हिदायत नहीं कर सकते और उन्हें नेकी और पाक दामनी की तरफ़ दावत नहीं दे सकते। हर नबी के लिये ज़रूरी है कि वह सब से पहले इस तरह लोगों का ऐतेमाद हासिल करे कि उसके

कौल व अमल में खता और गलती का ऐहतेमाल भी न दिया जाये, अगर नबी मासूम न हो तो दुश्मन उन की खता और गलती को बुनियाज बना कर और दोस्त उन की दावत को बे बुनियाद समझ कर दीन को क़बूल नही करेंगे। लिहाज़ा ज़रूरी है कि अल्लाह के नबी मासूम हों यानी हर तरह की खता, ग़लती और भूल चूक से पाक हों ता कि लोग उन की पैरवी करते हुए सआदत व खुशियों की मंज़िलों तक पहुँचें।

यह कैसे मुम्किन है कि खुदा बिला क़ैद व शर्त किसी इंसान की इताअत का हुक्म दे दे जबकि उसके अंदर खता का इम्कान व ऐहतेमाल भी पाया जाता हो? ऐसी सूरत में क्या लोगों को उस की इताअत व पैरवी करना चाहिये? अगर पैरवी करें तो गोया उन्होंने एक खता कार की पैरवी की है और अगर न करें तो नबियों की रहबरी बे मक़सद हो जायेगी।

यही वजह है कि मुफ़स्सेरीन जब आयत

اطيعوا الله واطيعوا الرسول و اولى الامر منكم

इताअत करो खुदा की और इताअत करो रसूल और उलिल अम्र की, (सूर ए निसा आयत ५९) पर पहुचते हैं तो कहते हैं कि खुदा ने बिला कैद व शर्त रसूल की इताअत का हुकम दिया है और यह इस बात की दलील है कि रसूल भी मासूम हैं और उलिल अम्र यानी आइम्म ए मासूमीन (अ) भी वर्ना खुदा हरगिज़ उन की बिला कैद व शर्त पैरवी करने का हुकम नहीं देता। नबियों की इस्मत को साबित करने का एक रास्ता यह है कि हम खुद को देखें, जब हम अपने अंदर गौर व फिक्र करेंगे तो देखेंगे कि हम भी बाज़ गुनाहों या गंदे और बुरे कामों में मासूम हैं जैसे क्या कोई अक्लमंद इंसान बैतुल खला की गंदगी या कूड़ा करकट खा सकता है? क्या कोई समझदार इंसान बिजली के नंगे तार को छू सकता है? क्या कोई समझदार और मतीन इंसान नंगा हो कर सड़क व बाज़ार में आ सकता है? ऐसे बहुत से दूसरे सवाल जिनका जवाब कतई तौर पर नहीं में होगा यानी ऐसे काम समझदार लोग कभी नहीं करेंगे और अगर कोई शख्स ऐसे काम अंजाम दे तो यक्रीनन या तो वह दीवाना होगा या फिर किसी मजबूरी में वह अफ़आल अंजाम दे रहा होगा।

जब हम ऐसे कामों का तवज्जो करते हैं तो मालूम होता है कि इन कामों की बुराई हमारे लिये इस कद्र वाज़ेह व ज़ाहिर है कि हम उसे अंजाम नहीं दे सकते।

इस मक़ाम पर पहुँचने के बाद हम यह कह सकते हैं कि हर अक्ल मंद व समझदार इंसान बाज़ गंदे और बुरे कामों से महफूज़ है यानी एक तरह की इस्मत का हामिल है ।

इस मरहले से गुज़रने के बाद हम देखते हैं कि बाज़ लोग बहुत से दूसरे कामों को भी अंजाम नहीं देते हैं जबकि आम लोगों के लियह वह मामूली सी बात होती है जैसे एक माहिर और जानकार डॉक्टर जो हर तरह के जरासीम के बारे में जानता है, हरगिज़ इस बात पर राज़ी नहीं होगा कि सड़क पर लगे नल का गंदा पानी पिये जब कि मुम्किन है कि एक आम इंसान उस पानी को हमेशा पिये और उस में किसी तरह की कराहत का अहसास भी न करे।

इससे मालूम होता है कि इंसान का इल्म जितना ज़्यादा होगा वह उतना ही बुरे और गंदे कामों से अमान में रहेगा लिहाज़ा अगर किसी का इल्म और उसका ईमान इतना ज़्यादा बुलंद हो जाये और खुदा पर उसका यकीन इस क़दर ज़्यादा हो जाये कि वह हर जगह उसको हाज़िर व नाज़िर जानता हो तो यकीनन ऐसा शख्स महफूज़ होगा, अब उसके सामने हर बुरा काम और हर गुनाह बैतुल ख़ला की गंदगी, कूड़ा करकट खाने, बिजली के नंगे तार को छूने या कूचे व बाज़ार में बिल्कुल बरहना होने के मानिन्द होगा ।

इन तमाम बातों का नतीजा यह हुआ कि हमारे अंबिया अपने बे पनाह इल्म और बे नज़ीर ईमान की वजह से गुनाहों और हर तरह की भूल चूक से महफूज़ हैं और कभी भी गुनाहों के असबाब उन पर ग़लबा हासिल नहीं कर सकते और यही अंबिया की इस्मत का मफ़हूम है।

खुलासा

-अंबिया ए इलाही (अ) का मासूम होना लाज़मी है इस लिये कि :

1.जो शख्स खुद गुनाह अंजाम देता हो उसमें ख़ता का इम्कान हो वह दूसरों की हिदायत नहीं कर सकता।

2.खुदा ऐसे शख्स की बिला क़ैद व शर्त पैरवी करने का हुक्म नहीं दे सकता जिसमें गुनाह अंजाम देने का इम्कान हो।

-अंबिया ए इलाही (अ) अपने बे पनाह इल्म और बे नज़ीर ईमान की वजह से गुनाह अंजाम नहीं देते।

सवालात

1. हादी व रहबर को खता व गलतियों से क्यों महफूज़ होना चाहिये?
2. खुदा खताकार शख्स की बिला कैद व शर्त पैरवी करने का हुक्म क्यों नहीं दे सकता?
3. किस तरह आक़िल और बाशऊर इंसान बाज़ गंदे और बुरे कामों को अंजाम देने में मासूम होता है? चंद मिसालों से वाज़िह करें।

चौदहवाँ सबक़

नबी को पहचानने के रास्ते

किसी भी दावा करने वाले के दावे को गौर व फ़िक्र के बग़ैर कुबूल कर लेना अक़ल व शऊर के ख़िलाफ़ है। मुम्किन है कि नबुव्वत व रिसालत का दावा करने वाला सच्चा हो और ख़ुदा की तरफ़ से ही भेजा गया हो लेकिन उसके साथ यह ऐहतेमाल व इम्कान भी पाया जाता है कि नबुव्वत व रिसालत का मुद्दई झूठा हो और ज़ाती मफ़ाद के पेशे नज़र अपनी नबुव्वत का दावा कर बैठा हो, लिहाज़ा ज़रूरी है कि सच्चे नबी को पहचानने के लियह हमारे पास चंद मेयार मौजूद हों। जिनमें से दो बहुत अहम हैं :

1. मोज़िज़ा

पैग़म्बरों की नबुव्वत और आलमे ग़ैब से उनके राबते को साबित करने वाले चंद रास्तों में से एक रास्ता मोज़िज़ा है। मोज़िज़ा वह काम है जिसे अंबिया (अ) ख़ुदा वंदे आलम के हुक्म से अपनी हक्कानियत और आलमे ग़ैब से अपने राबते को साबित करने के लिये अंजाम देते हैं और दूसरे अफ़राद उसे अंजाम देने से आजिज़ व मजबूर होते हैं। कुरआन करीम में मोज़िज़ा को आयत यानी अलामत से ताबीर किया गया है। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ) फ़रमाते हैं: ख़ुदा ने अपने

पैगम्बरों और जानशीनो को मोजिज़ा इनायत किया ताकि उनके दावे की सदाक़त पर गवाह हो, मोजिज़ा एक ऐसी अलामत है जिसे ख़ुदा अपने पैगम्बरों, रसूलों और अपनी हुज्जतों के अलावा किसी और को नहीं देता ताकि उसके ज़रिये सादिक़ व सच्चे नबी को झूठे मुद्दई से जुदा कर सके और सच्चे और झूठे में पहचान हो सके।[१]

2. गुज़िश्ता पैगम्बरों की पेशीनगोई

नबी को पहचानने का दूसरा रास्ता यह है कि उसके बारे में गुज़िश्ता नबी ने खबर दी हो । पैगम्बरे इस्लाम (अ) ने भी जब अपनी नबूवत का ऐलान किया तो गवाही के तौर पर यह दलील पेश की कि मैं वही पैगम्बर हूँ जिसका नाम तौरैत व इंजील में आया है लेकिन बहुत से यहूदियों और ईसाईयों ने न सिर्फ़ यह कि अपनी आसमानी किताबों की तरफ़ रुजू न किया और पैगम्बरे इस्लाम (स) की हक्कानियत को क़बूल न किया बल्कि इस्लाम व मुसलेमीन से बहुत सी जंगें लड़ीं, उन की किताबों में पैगम्बरे इस्लाम (स) के इस्में गिरामी के मौजूद होने के बारे में कुरआने मजीद में इरशाद होता है:

و اذ قال عيسى ابن مريم يا بنى اسرائيل انى رسول الله اليكم مصدقا لما بين يدي من التوراه و مبشرا برسول ياتى من بعدى اسمه احمد فلما جاءهم بالبينات قالوا هذا سحر ميين
याद करो उस वक़्त को जब ईसा (अ) बिन मरियम ने बनी इस्राईल से कहा: मैं तुम्हारी तरफ़ खुदा का भेजा हुआ रसूल हूँ, तौरैत की तस्दीक़ करता हूँ और तुम्हें अपने बाद आने वाले पैग़म्बर की बशारत देता हूँ जिसका नाम अहमद है लेकिन जब वह पैग़म्बर मोज़िज़ात और निशानियो के साथ आया तो उन लोगों (यहूदियों और ईसाईयों) ने कहा कि यह तो खुला हुआ जादू है।

उन्हीं यहूदियों की नस्ल "इसराईल" आज भी पूरी दुनिया में मुसलमानों के खिलाफ़ साज़िश में मसरूफ़ है और इस्लाम को तबाह करना चाहती है लेकिन जिस तरह से पैग़म्बर (स) के ज़माने में यहूदी कामयाब न हो सके। उसी तरह आज भी वह इस्लाम व मुसलेमीन के सामने ज़लील व बेबस नज़र आ रहे हैं।

खुलासा

- सच्चे नबी को इन रास्तों से पहचाना जा सकता है:

1. मोजिज़ा

2. गुज़िश्ता पैग़म्बरों की पेशीनगोई

- मोजिज़ा वह काम है जिसको अंजाम देने से आम इंसान आजिज़ व नातवाँ होता है।

- अंबिया (अ) अपनी हक्कानियत और आलमें ग़ैब से अपने राबते को साबित करने के लिए यह ख़ुदा के हुक्म से मोजिज़ा दिखाते थे।

- गुज़िश्ता आसमानी किताबों में पैग़म्बरे इस्लाम (स) के आने की बशारत दी गई है, इस सिलसिले में कुरआन में आयत भी मौजूद है।

सवालात

1. नबी को पहचानने के कौन कौन से रास्ते हैं? हर एक पर मुख्तसर रौशनी डालें।

2. मोजिज़ा किसे कहते हैं?

3. अम्बिया मोजिजा क्यों दिखाते थे?

4. क्या पैगम्बरे इस्लाम के बारे में गुज़िश्ता आसमानी किताबों में बशारत दी गई है?

[1]. बिहारूल अनवार जिल्द ११ पेज २१

पंद्रहवाँ सबक

पैगम्बरे इस्लाम (स) आखिरी नबी

पैगम्बरे इस्लाम हज़रते मोहम्मद मुस्तफ़ा (स) आखिरी नबी हैं यानी आप पर सिलसिले नबूवत ख़त्म हो गया । इसी लिये आपको (स) खातिमुल अम्बिया कहा जाता है । यह बात दीने इस्लाम की ज़रूरियात में से है यानी हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि जिस तरह वह तौहीद का इकरार करता है उसी तरह पैगम्बरे इस्लाम (स) की खातेमीयत का भी इकरार करे ।

दर हकीकत पैगम्बरे इस्लाम (स) के मबऊस होने के बाद काफ़िले बशरीयत ने एक के बाद एक (आहिस्ता आहिस्ता) आपने कमाल की राहें तय कीं और इस मक़ाम पर पहुच गया कि अब वह अपने रुशद व नुमू की राहों को इस्लामी तालीमात के सहारे खुद तय कर सकता था यानी इस्लाम एक ऐसा क़ानून बनकर सामने आया जो ऐतेकादात के लिहाज़ से भी कामिल था और अमल के लिहाज़ से भी इस तरह मुनज़ज़म किया गया था कि हर ज़माने के इंसान की ज़रूरतों को पूरा कर सके।

पैगम्बरे इस्लाम (स) के खातिमुल अंबिया होने की दलीलें

1. हुज़ूरे अकरम (स) की खातेमियत पर बहुत सी कुरआनी आयात गवाह हैं मिसाल के तौर पर इरशाद होता है:

ما كان محمدا ابا احد من رجالكم ولكن رسول الله و خاتم النبيين (सूर ए अहज़ाब आयत

४०)

‘‘ हज़रते मोहम्मद (स) मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं बल्कि वह सिर्फ़ रसूले खुदा और खातिमुल अम्बिया हैं। ’ ’

मज़कूरह आयत से मालूम होता है कि जिस तरह लोगों के लिये पैग़म्बरे इस्लाम (स) की रिसालत वाज़िह व ज़ाहिर थी उसी तरह आप (स) की खातेमीयत भी साबित व उस्तुवार थी ।

2. बहुत सी रिवायतें मौजूद हैं जो आप (स) की खातेमीयत पर वाज़िह दलील हैं । यहाँ सिर्फ़ चंद रिवायात ज़िक्र की जा रही हैं:

अ) जाबिर बिन अब्दुलाहे अंसारी ने पैग़म्बरे इस्लाम (स) से एक मोतबर हदीस नक़ल की है कि आपने (स) फ़रमाया: “मैं पैग़म्बरों के दरमियान उसी तरह हूँ जैसे कोई ख़ूबसूरत घर बना डाले, उसे कामिल कर दे लेकिन उसमें सिर्फ़ एक ईट की जगह छोड़ दे, अब जो भी इस घर में दाख़िल होगा तो कहेगा कि कितना ख़ूबसूरत घर है लेकिन इसमें एक कमी है कि यह जगह ख़ाली है , मैं भी इमारते नबूवत की वही आख़िरी ईट हूँ और नबूवत मुझ पर ख़त्म होती है’ ’ ।

ब) इमाम जाफ़र सादिक (अ) फ़रमाते हैं:

[حلال محمد حلال الى يوم القيامة وحرامه حرام ابدا الى يوم القيامة 1]

“ हलाले मोहम्मद ता क़यामत हलाल और हरामे मोहम्मद ता क़यामत हराम है’ ’ ।

स) शिया व सुन्नी किताबों में एक मारुफ़ और मोतबर हदीस मौजूद है जिसमें नबी अकरम (स) हज़रत अमीरुल मोमीनीन (अ) को खिताब करते हुए फ़रमाते हैं:

انت منى بمنزلة هارون من موسى الا انه لا نبي بعدى

’ ऐ अली (अ) तुमको मुझसे वही निस्बत है जो हीरून (अ) को मूसा (अ) से थी बस फ़र्क़ यह है कि मेरे बाद कोई नबी न होगा। ’ [२]

ख़ुलासा

- पैगम्बरे इस्लाम हज़रते मोहम्मद मुस्तफ़ा (स) आखिरी नबी हैं इसी लिये आपको (स) खातिमुल अम्बिया कहा जाता है । खतिमीयते रसूले इस्लाम (स) पर ईमान रखना ज़रूरियाते दीन में से है।

-इस्लाम ऐतेक्दात और आमल के लिहाज़ से इस तरह मुनज़ज़म किया गया है कि हर ज़माने के इंसान की ज़रूरतों को पूरा कर सकता है । इसी लिये इस्लाम आखिरी दीन और नबी अकरम (स) आखिरी रसूल हैं ।

- पैगम्बरे इस्लाम (स) की खातेमीयत पर बहुत सी आयात व रिवायात दलील के तौर पर मौजूद हैं।

सवालात

1. पैगम्बरे इस्लाम (स) को खातिमुल अम्बिया क्यों कहा जाता है?
2. क्या पैगम्बरे इस्लाम (स) की खतिमीयत पर ईमान रखना ज़रूरियाते दीन में से है?

3. दीने इस्लाम के आखिरी दीन और नबी अकरम (स) के आखिरी रसूल होने का क्या सबब है?

4. नबी अकरम (स) की खतिमीयत पर दलालत करने वाली वह हदीस लिखें जो आपने हज़रत अली (अ) को खिताब करके बयान फ़रमाई थी।

[1]. उसूले काफ़ी जिल्द १ पेज ५८

[2]. सही बुखारी बाब १४ पेज ३८७, सही मुस्लिम जिल्द ३ पेज २७८

सोलहवाँ सबक़

पैग़म्बरे इस्लाम (स) का सबसे बड़ा मोज़िज़ा

तमाम उलमा ए इस्लाम इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि पैग़म्बरे इस्लाम (स) का सबसे बड़ा मोज़िज़ा कुरआने मजीद है इस लिये कि:

1. कुरआन एक ऐसा अक्ली मोजिज़ा है जो लोगों की रूह व फ़िक्र के मुताबिक़ है।

2. कुरआन हमेशा बाक़ी रहने वाला मोजिज़ा है।

3. कुरआन एक ऐसा मोजिज़ा है जो चौदह सदियों से आवाज़ दे रहा है कि अगर तुम कहते हो कि यह किताब, ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल नहीं हुई है तो उसके जैसी किताब लाकर दिखाओ।

कुरआने मजीद ने अपने मुन्किरों को कई मक़ाम पर चैलेंज किया है, एक जगह इरशाद होता है:

قل لئن اجتمعت الانس والجن على ان ياتو بمثل هذا القرآن لا ياتون بمثله و لو كان بعضهم لبعض ظهيرا (सूर ए इसरा आयत ८८)

‘‘ कह दो कि अगर तमाम इंसान और जिन मिल जुल कर इस बात पर तैयार हो जायें कि इस कुरआन जैसी किताब ले आयें तो वह उसके जैसा नहीं ला सकते। अगरचे वह एक दूसरे की मदद ही क्यों न करें।’’

दूसरे मक़ाम पर कुरआने मजीद अपने उस चैलेंज को आसान बना कर पेश करता है:

فاتو بعشر سور مثله مفتریات وادعو من استطعتم من دون الله ان كنتم صادقین (سूर ए हूद आयत १३)

‘ तो तुम उसके जैसे दस सूरह ले आओ और खुदा के अलावा जिसको चाहो मदद के लिये बुला लो अगर तुम अपने दावे में सचे हो। ’

फ़िर कुरआन ने एक जगह चैलेंज को और आसान कर दिया , इरशाद होता है:

و ان كنتم فی ريب مما نزلنا على عبدنا فاتو بسورة من مثله (سूर ए बकरा आयत २१)

‘ अगर तुमको इस उसमें शक व शुबहा है जो हमने अपने बंदे पर नाज़िल किया है तो उसके जैसा एक सूरह ही ले आओ। ’

कुरआन में इतने चैलेंजों का आना इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि अगरचे पैग़म्बरे इस्लाम (स) को बहुत से दूसरे मोजिज़े भी अता किये गये थे लेकिन उन्होंने अपनी हक्कानियत को साबित करने के लिये कुरआन के इजाज़ पर ही सबसे ज़्यादा तकिया किया है।

वलीद बिन मुगीरा का क्रिस्सा

जिन लोगों को कुरआने मजीद ने चैलेंज किया था उसमें से एक वलीद बिन मुगीरा था जो उस ज़माने में अरब के दरमियान फ़िक्र व तदब्बुर के लिहाज़ से बहुत मशहूर था । एक दिन उसने पैग़म्बरे इस्लाम (स) से कहा कि कुरआन की चंद आयात पढ़िये, हुज़ूरे अकरम (स) ने सुर ए “हाम मीम सजदा’ ’ की चंद आयतों की तिलावत फ़रमाई, उन आयतों ने वलीद के अंदर ऐसा असर किया कि वह बे इख्तियार अपनी जगह से उठा और “कबील ए बनी मखज़ूम’ ’ की एक नशिस्त में पहुँचा और कहने लगा कि खुदा की क़सम मोहम्मद (स) से ऐसा कलाम सुना है जो न इंसानों जैसा कलाम है और न परियों जैसा... फिर उसने कहा: उनकी गुफ़्तार में एक ख़ास मिठास और मख़सूस जमाल है, उसकी बुलंदी फलदार दरख़त की तरह और उसकी बुनियाद मोहकम है, वह एक ऐसा कलाम है जो हर कलाम पर ग़ालिब रहेगा और उस पर कोई ग़ालिब न हो पायेगा ।

यह बात सुनकर सब हैरान रह गये और सब कहने लगे कि वलीद मोहम्मद (स) पर फ़िदा हो गया है लेकिन वलीद ने कहा क्या तुम समझते हो मोहम्मद (स) दीवाने हैं? आज तक उन पर कभी दीवानगी के आसार दिखाई दिया हैं? लोगों ने कहा: नहीं! फिर वलीद ने पूछा: क्या तुम यह तसव्वुर करते हो कि मोहम्मद (स) झूठे? हैं क्या आज तक तुम्हारे दरमियान वह सदाक़त व अमानत में मशहूर नहीं हैं?! कुरैश के सरदारों ने कहा तो फिर हम उनकी तरफ़ कौन सी निस्बत दें? वलीद ने कुछ देर सोचने के बाद कहा हम यह कहते हैं कि वह "जादूगर" हैं।

कुरैश ने यह बात सारे अरब में फैला दी कि मोहम्मद (स) जादूगर हैं उनकी आयात जादू हैं उनसे दूरी इख़्तियार करो और उनकी बातों को न सुनो लेकिन उनकी तमाम कोशिशें नाकाम हो गयीं, हकीक़त के तिशना अफ़राद जूक़ दर जूक़ कुरआन के दामन में पनाह लेने लगे और इस असमानी पैग़ाम से सैराब होने लगे, दुश्मनों को शिकस्ते फ़ाश का सामना करना पड़ा।

आज भी कुरआन दुनिया वालों को चैलेंज कर रहा है कि ऐ फ़लसफ़ियों, ऐ अदीबों अगर तुम उम आयात की हक्क़ानियत के बारे में शक करते हो तो उसका जवाब लाओ!!

यहूदियत व ईसाईयत, इस्लाम और कुरआन के खिलाफ हर पर साल करोड़ों डॉलर खर्च कर रही है लेकिन हम कहते हैं कि इतना खर्च करने की जगह तुम कुरआन का चैलेंज मान लो और इस कुरआन के किसी एक सूरह का भी जवाब ले आओ।

खुलासा

-कुरआने मजीद, रसूले इस्लाम का सबसे बड़ा मोजिज़ा है इस लिये कि वह लोगों की रूह व फ़िक्र से साज़गार और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उसने अपने मुनकिरों को चैलेंज किया है कि उसका मिस्ल ला कर दिखाओ!

-कुरआन में कई मक़ाम पर मुनकिरों को चैलेंज किया किया है और सबसे आसान शक़ल में अपना चैलेंज पेश करते हुए कहा है कि सिर्फ़ एक सूरह ही लाकर दिखाओ।

-आज भी कुरआन दुनिया वालों को चैलेंज कर रहा है कि अगर तुम्हें इसकी आयतो के बारे में शक है तो उसकी मिसाल ला कर दिखाओ।

सवालात

1. कुरआने मजीद रसूले अकरम (स) का सबसे बड़ा मोजिज़ा क्यों है?
2. अपने मुनकिरों के लिये कुरआने मजीद का सबसे असान चैलेंज कौन सा है?
3. क्या कुरआन आज भी अपने मुनकिरों को चैलेंज कर रहा है?

सतरहवाँ सबक

इमामत और इमाम की ज़रूरत

इमामत भी तौहीद व नबुव्वत की तरह उसूले दीन में से है। इमामत यानी पैगम्बरे इस्लाम (स) की जानशीनी और दीनी व दुनियावी कामों में लोगों की रहबरी करना।

पैगम्बर और नबी की ज़रूरत के बारे में हम ने जो दलीलें पढ़ी है। उन में से अकसर दलीलों की बुनियाद पर इमामत की ज़रूरत भी वाज़ेह व ज़ाहिर हो जाती है। इसलिये कि उन के बहुत से काम एक जैसे हैं लेकिन उस के अलावा भी बहुत से असबाब इमाम की ज़रूरत को हमारे लिये वाज़ेह करते हैं। जैसे:

1. इमाम की सर परस्ती में कमाल तक पहुचना

इंसान खुदा वंदे आलम की तरफ़ जाने वाले आसान व मुश्किल रास्तों को तय करता है ता कि हर तरह का कमाल हासिल करे और इस में भी कोई शक व

शुबहा नही है कि यह मुकद्दस सफ़र किसी मासूम की राहनुमाई के बग़ैर मुम्किन नही है। यह बात अपनी जगह सही है कि खुदा वंदे आलम ने इंसान को अक्ल जैसी नेमत से नवाज़ा है, ज़मीर जैसा नसीहत करने वाला दिया है, आसमानी किताबें नाज़िल की है, लेकिन फिर भी मुम्किन है कि इंसान इन तमाम चीज़ों के बा वजूद भटक जाये और गुनाह में पड़ जाये। ऐसी सूरत में एक मासूम रहबर का वुजूद समाज और उस में बसने वालों को भटकने और गुमराह होने से बचाने में काफ़ी हद तक मुअस्सिर है। इस का मतलब यह हुआ कि इमाम का वुजूद इंसान को उस के मक़सद और हदफ़ तक पहुचाता है।

2. आसमानी शरीयतों की हिफ़ाज़त

हम जानते हैं कि खुदा के तमाम दीन जब नबियों के दिलों पर नाज़िल होते थे तो साफ़ और हयात बख़्श होते थे लेकिन नापाक समाज और बुरे लोग आहिस्ता आहिस्ता उस दीन को ख़ुराफ़ात के ज़रिये ख़राब बना देते थे। जिस के नतीजे में उस की पाकिज़गी ख़त्म हो जाती थी और फिर, उस में कोई जज़ाबियत बाक़ी रहती है न कोई तासीर, इसी वजह से मासूम इमाम का होना ज़रूरी है ता कि दीन की हकीकत को बाक़ी रखे और समाज को बुराई, गुमराही, ख़ुराफ़ात और ग़लत फ़िक्रों से बचाए रखे।

3. उम्मत की समाजी और सियासी रहनुमाई

इंसान की समाजी जिन्दगी एक ऐसे रहबर के बगैर नहीं है जिस के कौल व फैल पर अमल किया जाये। इसी लिये तारीख में तमाम लोग और मुख्तलिफ़ गिरोह किसी न किसी रहबर की क़यादत में रहे। चाहे वह अच्छा रहबर हो या बुरा। लेकिन यह बात मुसल्लम है कि इंसान एक ऐसे समाज का मोहताज है जिस में सही और इंसाफ़ पसंद निज़ाम कायम हो और ज़ाहिर है कि कोई गुनाहगार या खताकार इंसान ऐसे समाज को वुजूद में नहीं ला सकता बल्कि कोई मासूम इमाम ही ऐसे समाज को वुजूद बख़्श सकता है।

4. इतमामे हुज्जत

बहुत से इंसान ऐसे होते हैं जो हक़ व हकीकत को जानते हुए भी उस की मुख्तलिफ़त करते हैं। ऐसी सूरत में अगर इमाम का वुजूद न होता तो यह लोग क़यामत के दिन अल्लाह की बारगाह में यह बहाना पेश करते कि अगर कुछ आसमानी रहबर हमारी हिदायत के लिये होते तो हम इन गुनाहों को न करते।

इसी वजह से खुदा वंदे आलम ने तमाम इंसानों की हिदायत के लिये मासूम इमामों को भेजा ता कि लोगों पर हुज्जत तमाम करें और उन के लिये उज़्र पेश करने को कोई रास्ता बाक़ी न रह जाये।

खुलासा

-इमामत उसूले दीन में से है।

-जो असबाब और दलायले नबुव्वत की ज़रूरत को साबित करते हैं। उन में अकसर दलीलें इमामत की ज़रूरत को भी साबित करती है। इस के अलावा बहुत से असबाब हैं जो इमामत की ज़रूरत को वाज़ेह व ज़ाहिर करते हैं। जैसे:

क.इमाम की सर परस्ती में कमाल तक पहुचना।

ख.आसमानी शरीयतों की हिफ़ाज़त।

ग.उम्मत की समाजी और सियासी क़यादत।

घ.इतमामे हुज्जत।

सवालात

1. क्या इमामत उसूले दीन में से है?
2. इमाम का वुजूद क्यों ज़रूरी हैं? मुख्तसर वज़ाहत के साथ दो दलीलें लिखें।
3. किस तरह खुदा वंदे आलम इमाम को भेज कर लोगों पर हुज्जत तमाम करता है?

अठ्ठारवाँ सबक

इमाम की सिफ़ात

पैग़म्बरे इस्लाम (स) के जानशीन के उनवान से मुसलमानों के इमाम को चंद बुलंद तरीन सिफ़ात का हामिल होना चाहिये इसलिये कि खुद मक़ामे इमामत भी एक ऐसा मुहिम मक़ाम है, उम्मत की दीनी व दुनियावी रहबरी की ज़िम्मेदारी संभालता है। उनमें से चंद सिफ़तें यह हैं:

1. मासूम होना

इमाम के लिये ज़रूरी है कि वह पैग़म्बर (स) की तरह मासूम हो यानी हर तरह की खता व ग़लती और भूल चूक से महफूज़ हो, वरना वह लोगों के लिये किसी सूरत में नमूने अमल (IDEAL) और काबिले एतिमाद शख्स नहीं हो सकता, इसी

तरह वह समाज को भी सआदत की मंज़िलों तक नहीं पहुँच सकता। इसलिये कि जो खुद गुनाहगार होगा वह मुआशरे की बुराईयों को दूर नहीं कर सकता है।

2. इल्मे ग़ैब का हामिल होना

इमाम पैग़म्बर (स) की तरह ही लोगों के लिये इल्मी पनाहगाह होता है। उसके लिये ज़रूरी है कि वह दीन के तमाम उसूल व फ़ुरूअ, कुरआन के ज़ाहिर व बातिन, सुन्नते पैग़म्बर (स) और इस्लाम से मुतअल्लिक तमाम उलूम और तमाम जुज़ईयात से कामिल तौर पर वाक्फ़ हो। इसी तरह यह भी ज़रूरी है कि कायनात के ज़र्रे ज़र्रे का इल्म भी उसके पास हो, इमाम को आलिमे ग़ैब भी होना चाहिये और तमाम उलूमे इलाही से कामिल तौर पर वाक्फ़ होना चाहिये।

3. शुजाअत होना

इमाम के लिये यह भी ज़रूरी है कि वह मआशरे का सबसे शुजा शख्स हो। इसलिये कि शुजाअत के बगैर हक़ीक़ी रहबरी वजूद में नहीं आ सकती। इमाम को तमाम तल्ख़ हादिसात, अंदरूरी व बैरूनी दुश्मनों, ख़यानत कार और ज़ालिम अफ़राद और मआशरे की तमाम बुराईयों से मुक़ाबला करने के लिये शुजाअत होना चाहिये।

4. ज़ोहद व तक़वा का हामिल होना

जो दुनिया और उसकी रंगिनियों से दिल लगाते हैं वह जल्दी धोखा खा जाते हैं और उनके गुमराह होने का इम्कान भी ज़्यादा होता है लेकिन इमाम को चाहिये कि वह दुनिया का “असीर” न हो बल्कि उसका “अमीर” हो। उसके लिये ज़रूरी है कि वह हवा ए नफ़स और माल व मनाल व जाह व मक़ाम की कैद से आज़ाद रहे और ज़िन्दगी के हर लम्हे में ज़ोहद व तक़वा इख़्तियार किये रहे ताकि वह किसी से भी फ़रेब न खा सके।

5. बेहतरीन अखलाक़ से मुत्तसिफ़ होना

क़ुरआने मजीद में पैग़म्बरे इस्लाम (स) के बारे में इरशाद होता है “अगर तुम सख़्त और संगदिल होते तो लोग तुम्हारे पास से इधर उधर भागते।’ ’ [१] इस आयत से मालूम होता है कि किसी भी क़ाइद व रहबर को बेहतरीन अखलाक़ का हामिल होना चाहिये ताकि लोग ख़ुद ब ख़ुद उसकी जानिब आयें। हर तरह की बदअखलाकी और संगदिली पैग़म्बर या इमाम के लिये बहुत बड़ा ऐब है, उसे हर तरह के बुराईयों से मुनज़ज़ह व मुबर्रा व पाक और तमाम बेहतरीन अखलाक़ का हामिल होना चाहिये।

6. ख़ुदा की तरफ़ से होना

इमाम ख़ुदा की तरफ़ पैग़म्बरे इस्लाम (स) या गुज़िश्ता इमाम (अ) के ज़रिये मोअय्यन किया जाता है इसलिये कि ख़ुदा वंदे आलम और पैग़म्बरे इस्लाम (स) के अलावा कोई दूसरा किसी के मासूम होने का इल्म नहीं रखता है और लोग भी

किसी के मुस्तक़बिल से आगाह नहीं हैं कि फ़लाँ शख्स आइंदा कैसा रहेगा और क्या करेगा? लिहाज़ा इमाम को खुदा की तरफ़ से मंसूब होना चाहिये। लोग किसी को इमाम नहीं बना सकते इसलिये कि मुम्किन है कि लोग किसी शख्स को बहुत पाक और मासूम जानें लेकिन हकीकत में वह एक गुनाहगार शख्स हो लिहाज़ा यह मानना पड़ेगा कि सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा वंदे आलम की ज़ात ही है जिसको “इमाम ’ ’ मोअय्यन करने का हक़ है इसलिये कि वह हर शख्स के ज़ाहिर व बातिन से आगाह है और कामिल तौर पर जानता है कि कौन मासूम है और कौन ग़ैरे मासूम? कौन शख्स जानशीने पैग़म्बर बनकर करामत की रहबरी की लियाक़त रखता है और कौन नहीं रखता?

इमाम की इन सिफ़ात और शराइत के अलावा और भी बहुत सी दूसरी सिफ़ात उलमा ए इस्लाम ने बयान की हैं जो बड़ी किताबों में मौजूद हैं।

खुलासा

- पैग़म्बरे इस्लाम के जानशीन के उनवान से मुसल्मानों के इमाम को चंद बुलंद तरीन सिफ़ात का हामिल होना चाहिये, जिनमें से कुछ का ज़िक्र यहाँ पर किया जा रहा है:

1. मासूम होना।
2. बेपनाह इल्म का हामिल होना।
3. शुजा होना।
4. साहिबे ज़ोहद व तक़वा होना।
5. बेहतरीन अखलाक़ का हामिल होना।
6. ख़ुदा की तरफ़ से होना।

सवालात

1. क्या पैगम्बरे इस्लाम के जानशीन को बुलंद तरीन सिफ़ात का हामिल होना चाहिये? क्यों?
 2. इमाम की सिफ़ात में से दो सिफ़ातों को मुख्तसर वज़ाहत के साथ लिखें?
 3. क्यों इमाम को बेहतरीन अखलाक़ का हामिल होना चाहिये?
 4. क्या खुदा के अलावा भी कोई शख्स इमाम को मोअय्यन कर सकता है? क्यों?
-

[1]. सूर ए आले इमरान आयत ५९

उन्नीसवाँ सबक

हमारे अइम्मा (अ)

हम शियों का अक्कीदा है कि ख़ुदा वंदे आलम ने पैगम्बरे इस्लाम (स) की रिसालत को जारी रखने के लिये बारह मासूम इमामों को आप (स) के जानशीन के उनवान से इंतिखाब किया है और हुज़ूरे अकरम (स) के बाद इनमें से हर इमाम ने अपने ज़माने में मुसलमानों का क़यादत व रहबरी की ज़िम्मेदारी संभाली, इमामत का यह सिलसिला जारी रहा यहाँ तक कि इमामे ज़माना (अ) की इमामत शुरू हुई। जो अल्लाह के करम से आज तक जारी है और रोज़े क़यामत तक जारी रहेगी।

हमारे अइम्मा बारह हैं

इस बात पर बहुत सी शिया व सुन्नी रिवायतें दलालत करती हैं कि रसूले इस्लाम (स) के खलीफ़ाओं की तादाद बारह हैं। अहले सुन्नत की मोतबर किताबों सही बुखारी, सही मुस्लिम, सुनने तिरमिज़ी, सुनने इबने दाऊद, मुसनदे अहमद

वगैरा में इस तरह की रिवायात वारिद हुई हैं, मिसाल के तौर पर जाबिर बिन समरा कहते हैं कि मैंने पैगम्बरे इस्लाम (स) से सुना है कि मेरे बाद बारह अमीर (खलीफ़ा) आयेगें। फिर आपने कुछ कहा जो मैं सुन न सका लेकिन मेरे वालिद ने बताया कि पैगम्बरे इस्लाम (स) ने कहा सबके सब कुरैश से होंगें।[१] इसी तरह एक मर्तबा जब आप (स) के जानशीनों के बारे में सवाल हुआ तो आपने (स) फ़रमाया:

اثنا عشر كعدة نقباء بنى اسرائيل “मेरे जानशीन बनी इस्राइल के नोक़बा की तरह बारह हैं।’ ’ [२]

इमामों की नाम बनाम वज़ाहत

शिया रिवायतों के अलावा सुन्नी रिवायतों में भी पैगम्बरे इस्लाम (स) ने हमारे इमामों की नाम बनाम वज़ाहत फ़रमाई है। मशहूर सुन्नी आलिमे दीन शैख सुलैमान कंदूज़ी अपनी किताब “यनाबीउल मवद्दा’ ’ में नक़ल करते हैं कि एक बार नासल नाम का एक यहूदी हुज़ूरे अकरम (स) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और

अपने दूसरे सवालों के ज़िम्न में उसने पैग़म्बरे इस्लाम (स) से आपके (स) जानशीनों के बारे में भी पूछा तो आपने (स) फ़रमाया: “अली बिन अबी तालिब (अ) मेरे वसी हैं और उनके बाद मेरे दो फ़रज़ंद, हसन (अ) व हुसैन (अ) और फिर हुसैन (अ) की नस्ल में आने वाले नौ इमाम मेरे वसी हैं’ ’ उस यहूदी ने उनके नाम पूछे तो आपने (स) फ़रमाया: “हुसैन (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद अली (अ) (इमाम सज्जाद), अली (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद मोहम्मद (अ) (इमाम बाकिर), मोहम्मद (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद जाफ़र (अ), जाफ़र (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद मूसा (अ), मूसा (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद अली (अ) (इमाम रिज़ा) अली (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद मोहम्मद (अ) (इमाम मोहम्मद तकी), अली (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद हसन (अ) (इमाम हसन असकरी), और हसन (अ) के बाद उनके फ़रज़ंद हुज्जतुल मेहदी (अज) (इमाम ज़माना) हैं और यही बारह इमाम हैं। “[३]

ज़माने के इमाम को पहचानना

सुन्नी किताबों में पैग़म्बरे इस्लाम (स) से ये हदीस नक़ल हुई है कि

[من مات بغير امام مات ميتة جاهلية 4]

‘‘ यानी जो शख्स किसी इमाम के बगैर मर जाये वह जाहिलीयत की मौत मरता है।’ ’

इसी तरह की अहादीस शिया किताबों में भी मौजूद हैं, जैसा कि एक हदीस में वारिद हुआ है:

[من مات ولم يعرف امامه مات ميتة جاهلية 5]

‘‘ जो शख्स अपने ज़माने के इमाम को पहचाने बगैर मर जाये वह जाहिलीयत की मौत मरता है’ ’

इन अहादीस से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि हर ज़माने में एक इमाम मौजूद होता है जिसको पहचानना वाज़िब है और उसकी मारिफ़त हासिल न करना इंसान के जाहिलीयत और कुफ़्र के दौर में लौटने का सबब बनता है।

खुलासा

- हम शियों का अक्कीदा है कि पैगम्बरे इस्लाम (स) के जानशीन और हमारे इमामों की तादाद बारह है। हर ज़माने में इमाम का होना ज़रूरी है और आज तक इमामे ज़माना (अज) की इमामत जारी है और रोज़े क़यामत तक जारी रहेगी।

- शिया किताबों के अलावा सही बुखारी, सही मुस्लिम, सुनने अबी दाऊद, और मुसनदे अहमद जैसी किताबों में भी पैगम्बरे इस्लाम (स) की यह हदीस नक्ल है कि मेरे खुलफ़ा बारह हैं और सबके सब कुरैश से हैं।

- शिया और सुन्नी किताबों में पैगम्बरे इस्लाम (स) की ये हदीस नक्ल हुई है कि जो शख्स अपने ज़माने के इमाम को न पहचाने, वह जाहिलीयत की मौत मरता है। इस हदीस से मालूम होता है कि हर ज़माने में एक इमाम मौजूद होता है जिसकी मारिफ़त हासिल करना वाजिब है।

सवालात

1. इमामों की तादाद के बारे में हमारा अक़ीदा क्या है?
2. इमामों का तादाद के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स) ने क्या फ़रमाया है?
3. क्या पैग़म्बरे इस्लाम (स) ने हमारे इमामों की नाम ब नाम वज़ाहत फ़रमाई है?
4. पैग़म्बरे इस्लाम (स) की हदीस के मुताबिक़ अपने ज़माने के इमाम को न पहचानने का क्या नुक़सान है?

[1]. सही बुखारी जिल्द ९ पेज १००

[2]. मुसनदे अहमद बिन हम्बल जिल्द १ पेज ३९८

[3]. यनीबीउल मवद्दा पेज ४४१

[4]. अल मोजमुल मुक़द्दस ले अलफ़ाज़िल अहादीसिन नबविया जिल्द ६ पेज ३०२

[5]. बहारूल अनवार जिल्द ६ पेज १६ (क़दीम तबाअत)

बीसवाँ सबक

मआद (क़यामत)

मौत के बाद क़यामत के दिन दुनिया में किये गये कामों का ईनाम या सज़ा पाने के लिये तमाम इंसानों के दोबारा ज़िन्दा किये जाने को “मआद” कहते हैं।

मआद, उसूले दीन का पाचवाँ हिस्सा है जो बहुत अहम है और कुरआने मजीद की १२०० आयतें मआद के बारे में नाज़िल हुई हैं, दूसरे उसूले दीन की तरह जो शख्स मआद का इंकार करे वह मुसलमान नहीं रहता. तमाम नबियों ने तौहीद की तरह लोगों को इस अक़ीदे की तरफ़ भी दावत दी है।

मआद की दलीलें

उलामा ने मआद की ज़रूरत पर बहुत सी दलीलें पेश की हैं जिन में से बाज़ यह हैं:

1. खुदा का आदिल होना

खुदा वंदे आलम ने इंसानों को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है लेकिन इंसान दो तरह के होते हैं:

१. वह जो खुदा के नेक और सालेह बंदे हैं।
२. वह जो खुदा की मासियत और गुनाहों में डूबे हुए हैं।

चूँकि खुदा आदिल है लिहाज़ा ज़रूरी है कि वह मोमिन को ईनाम और गुनाह करने वाले को सज़ा दे। लेकिन यह काम इस दुनिया में नहीं हो सकता इस लिये कि जिस शख्स ने सैकड़ों क़त्ल किये हों उसे इस दुनिया अगर सज़ा दी जाये तो उसे ज़्यादा से ज़्यादा मौत की सज़ा दी जायेगी। जो सिर्फ़ एक बार होगी जब कि उसने सैकड़ों क़त्ल किये हैं लिहाज़ा कोई ऐसी जगह होनी चाहिये जहाँ खुदा उसे उस के अमल के मुताबिक़ सज़ा दे और वह जगह आखिरत (मआद) है।

2. इंसान का बे मक़सद न होना

हम जानते हैं कि खुदा ने इंसान को बे मक़सद पैदा नहीं किया है बल्कि एक खास मक़सद के तहत उसे वुजूद अता किया है और वह खास मक़सद यह दुनियावी ज़िन्दगी नहीं है। इस लिये कि यह महदूद और ख़त्म हो जाने वाली ज़िन्दगी है जिस के बाद सब को उस दुनिया की तरफ़ जाना है जो हमेशा बाक़ी रहने वाली है लिहाज़ा अगर उसी दुनियावी ज़िन्दगी को पैदाईश का मक़सद मान लिया जाये तो यह एक बेकार और बे बुनियाद बात होगी। लिहाज़ा अगर ज़रा ग़ौर व फ़िक्र किया जाये तो मालूम हो जायेगा कि इंसान इस महदूद दुनियावी ज़िन्दगी के लिये नहीं बल्कि एक बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी के लिये पैदा किया गया है जो बाद के बाद की ज़िन्दगी यानी मआद है और यह दुनिया उसी असली ज़िन्दगी के लिये एक गुज़रगाह है। इस सिलसिले में कुरआने मजीद में इरशाद होता है:

افحسبتم انما خلقناكم عبثا و انكم اليينا لا ترجعون

क्या तुम यह ख़याल करते हो कि हम ने तुम्हे बे मक़सद पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ पलट कर न आओगे? (सूर ए मोमिनुन आयत ११५)

मआद के दिन सब के आमाल उन के सामने लाये जायेंगे। जिन लोगों ने नेक आमाल अंजाम दिये है उन का नाम ए आमाल दाहिने हाथ में होगा लेकिन जिन लोगों ने बुरे आमाल किये होंगे उन की नाम ए आमाल बायें हाथ में होगा और बुरे आमाल वाला अफ़सोस करेगा कि ऐ काश मैं बुरे काम अंजाम न देता।

खुलासा

-क़यामत के दिन ईनाम और सज़ा पाने के लिये मौत के बाद तमाम इंसानों के दोबारा ज़िन्दा होने को मआद कहते हैं, इस्लाम में मआद को काफ़ी अहमियत हासिल है। मआद की दो अहम दलीलें:

1. खुदा का आदिल होना: इस दुनिया में नेक काम करने वालों को ईनाम और गुनाह करने वालों को सज़ा नहीं दी जा सकती। लिहाज़ा एक ऐसी जगह का होना ज़रूरी है जहाँ खुदा अपनी अदालत के ज़रिये ईनाम और सज़ा दे सके और वह जगह वही आलमे आख़िरत या मआद है।

2. इंसान का बे मक़सद न होना: खुदा ने इंसान को बे मक़सद पैदा नहीं किया है बल्कि ख़ास मक़सद के तहत उसे वुजूद बख़्शा है और वह ख़ास मक़सद यह महदूद दुनियावी ज़िन्दगी नहीं हो सकती। इस लिये कि यह एक बेकार बात होगी, वह ख़ास मक़सद हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी है और इस दुनिया के बाद हासिल होगी जिसे मआद कहते हैं।

सवालात

1. मआद की तारीफ़ बयान करें?
2. अदालते ख़ुदा के ज़रिये मआद को साबित करें?
3. इंसान की पैदाईश का मक़सद यह दुनियावी ज़िन्दगी क्यों नहीं हो सकती?

इक्कीसवाँ सबक़

मआद जिस्मानी है या रूहानी

जब मआद की बात आती है तो हमारे ज़हन में एक सवाल पैदा होता है कि क्या मौत के बाद की ज़िन्दगी सिर्फ़ रूहानी ज़िन्दगी है? क्या जिस्म खत्म हो जायेगा? क्या आखिरत की ज़िन्दगी सिर्फ़ रूह से मुतअल्लिक है?

इन तमाम सवालों का जवाब सिर्फ़ एक जुमला है और वह यह कि मआद या आखिरत की ज़िन्दगी न सिर्फ़ यह कि रूहानी है बल्कि जिस्मानी भी है। इस नज़रिये पर बहुत सी दलीलें मौजूद हैं जिन में से बाज़ यह है:

1. एक दिन उबई बिन ख़लफ़ पैग़म्बरे इस्लाम (स) की ख़िदमत में एक पुरानी हड्डी ले कर आया और मआद यानी मौत के बाद ज़िन्दा होने का इंकार करने की गरज़ से उसने हड्डियों को मसल दिया और उस के बुरादे को हवा में बिखेर दिया फिर सवाल किया कि कैसे मुम्किन है कि यह फ़ज़ा में बिखरी हुई हड्डी दोबारा अपनी पुरानी सूरत में आ जाये? तो यह आयत नाज़िल हुई: (.....) कह दो कि उसे वही ज़ात दोबारा ज़िन्दा करेगी जिसने उस पहली बार वुजूद बख़शा। (सूर ए यासीन आयत ७९)

2. कुरआने मजीद में इरशाद होता है:

قل يحييها الذى انشأها اول مرة

(क़यामत के दिन तुम क़ब्रों से निकलोगे।)(सूर ए क़मर आयत ७)

हम जानते हैं कि क़ब्र बदन की जगह है, रूह का मक़ाम नहीं है लिहाज़ा साबित हो जाता है कि क़ब्र से लोगों के जिस्म निकलेगें।

3. कुरआने मजीद में एक आयत है जिस में बयान हुआ है कि एक अरबी शख्स लोगों से पैग़म्बरे इस्लाम (स) के बारे में कहता था: क्या यह इंसान तुम से इस बात का वादा कर रहा है कि तुम मर कर ख़ाक और हड्डी हो जाओगे और उस के बाद फिर ज़िन्दगी हासिल कर लोगे? ।

इस आयत से भी मालूम होता है कि पैग़म्बरे इस्लाम (स) लोगों से यह फ़रमाते थे कि यही जिस्म ख़ाक होने के बाद दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा।

इस तरह की बहुत सी आयतें कुरआने मजीद में मौजूद हैं जिस का मुतालआ करने के बाद वाज़ेह हो जाता है कि मआद सिर्फ़ रूहानी नहीं है बल्कि जिस्मानी भी है।

खुलासा

-मआद सिर्फ़ रूहानी नहीं बल्कि जिस्मानी भी है।

-मआद के जिस्मानी होने पर उबई बिन खलफ़ का वाक़ेया और कुरआन की आयते मोहकम और मज़बूत दलीलें हैं।

सवालात

1. मआद जिस्मानी है या रूहानी?
2. उबई बिन खलफ़ के वाक़ेया के ज़रिये साबित करें कि मआद जिस्मानी भी है?

बाईसवाँ सबक

रजअत

रजअत अक़ल की रौशनी में

अरबी ज़बान में रजअत पलटने के मअना में है और इस्तेलाह में मौत के बाद और क़यामत से पहले बाज़ लोगों के दोबारा ज़िन्दा होने को रजअत कहते हैं, इमाम मेहदी (अ) के ज़हूर के साथ ही रजअत भी होगी। यह एक ऐसी हकीक़त है जो न अक़ल के ख़िलाफ़ है और न ही वहयी से इस का टकराव ज़ाहिर होता है।

इस्लाम और दूसरे आसमानी दीन की नज़र से इंसान की अस्ल उस की वह रुह होती है जिस को नफ़स भी कहा जाता है और वह बदन के फ़ना हो जाने के बाद भी बाक़ी रहती है।

दूसरी तरफ़ हम देखते हैं कि ख़ुदा क़ादिर मुतलक़ है और उस की क़ुदरत को कोई चीज़ महदूद नहीं कर सकती।

बयान की गई दोनों बातों से यह वाज़ेह हो जाता है कि रजअत का मसला अक़ल के हिसाब से एक मुम्किन काम है। इस लिये कि जो ख़ुदा इंसान को पहली बार पैदा कर सकता है उस ख़ुदा के लिये कुछ इंसानों को दोबारा इस दुनिया में पलटाना तो और भी ज़्यादा आसान होगा।

रजअत कुरआन की नज़र में

कुरआने मजीद में पिछली उम्मतों और क़ौमों में रजअत के नमूने पाये जाते हैं जिन से मालूम होता है कि तारीख़ में कुछ ऐसे लोग गुज़रे हैं जिन को ख़ुदा ने मौत के बाद दोबारा इस दुनिया में पलटाया है। हज़रत मूसा (अ) की क़ौम के बारे में इरशाद होता है:

و اذ قلتم يا موسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة فاخذتكم الصاعقة و انتم تنظرون

(और याद करो उस वक़्त को जब तुम ने कहा: ऐ मूसा, हम उस वक़्त तक तुम पर ईमान नहीं लायेंगे जब कि खुदा को देख नहीं लेते। लिहाज़ा तुम पर बिजली गिरी और तुम देखते रह गये फिर हमने तुम्हे तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया कि शायद तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।) (सूर ए बकरा आयत ५५, ५६)

इसी तरह कुरआने मजीद में हज़रत ईसा (अ) की ज़बानी इरशाद होता है: *واحي الموتى باذن الله*

(मैं मुर्दों को खुदा के हुक़म से ज़िन्दा करता हूँ।) (सूर ए आले इमरान आयत ४९)

पिछली दोनो आयतें रजअत के मुम्किन होने को साबित करती हैं जब कि ऐसी भी आयतें मौजूद हैं जिन में क़यामत से पहले बाज़ लोगों के बारे में ज़िन्दा होने की खबर दी गई है और यही वह रजअत है। जिस के हम शिया कायल हैं, यह रजअत अभी तक वाक़े नहीं हुई है, इस सिलसिले में इरशाद होता है: *و اذ وقع القول عليهم اخرجنا لهم دابة من الارض تكلمهم ان الناس كانوا بآياتنا لا يوقنون و يوم نحشر من كل امة فوجا ممن يكذب بآياتنا فهم يوزعون*

(और जब उन पर वादा पूरा होगा तो हम ज़मीन से एक चलने वाला निकाल कर खड़ा कर देंगे जो उन से बात करे कि कौन लोग हमारी आयतों पर यक्रीन नहीं रखते थे और उस हम हर उम्मत से एक फ़ौज इकठ्ठा करेंगे। जो हमारी निशानियों को झुठलाया करते थे और फिर अलग अलग तकसीम कर दिये जायेंगे।) (सूर ए नम्ल आयत ८२, ८३)

क़यामत से पहले पेश आने वाली रजअत के सुबूत में इन आयतों को दलील बनाने के लिये नीचे बयान होने वाली बातों पर तवज्जो देना ज़रूरी है:

1. शिया और सुन्नी मुफ़स्सिरों के मुताबिक़ यह आयतें क़यामत के बारे में नाज़िल हुई है। पहली आयत, क़यामत की अलामत बयान कर रही है जब कि जलालुद्दीन सुयूती एक रिवायत नक़ल करते हैं जिस में ज़िक्र हुआ है कि चौपाये का निकलना क़यामत की निशानी है।[१]

2. बिला शक व शुबहा क़यामत के दिन तमाम इंसान उठाये जायेंगे न कि कोई खास गिरोह। इस लिये कि कुरआने मजीद में सूरते हाल यूँ बयान की गई है: ذلک

یوم مجموع له الناس

(उस दिन जब सब लोग जमा किये जायेंगे।) (सूर ए हूद आयत १०३) इस आयत से वाज़ेह है कि क़यामत के दिन तमाम इंसान ज़िन्दा किये जायेंगे और यह बात किसी ख़ास गिरोह से मख़सूस नहीं है।

3. सूर ए नम्ल की ८३ वी आयत में एक ख़ास गिरोह के ज़िन्दा किये जाने के बारे में बात कही गई है और यह आयत तमाम इंसानों के उठाये जाने का इंकार कर रही है इस आयत में इरशाद हुआ है: **و يوم نحشر من كل امة فوجا ممن يكذب**
بآياتنا فهم يوزعون

(और उस दिन हम हर उम्मत से एक एक गिरोह को इकठ्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुटलाया करते थे।)

यह आयत इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि तमाम इंसान ज़िन्दा नहीं किये जायेंगे।

नतीजा: इन तीनों बातों से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि इंसानों के एक ख़ास गिरोह के ज़िन्दा किये जाने की जो बात इस आयत में ज़िक्र हुई है वह क़यामत से पहले वाक़े होगी। इसलिये कि क़यामत में सिर्फ़ कोई ख़ास गिरोह नहीं उठाया

जायेगा बल्कि तमाम इंसान उठाये जायेंगे लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि यह ज़िन्दा किया जाना क़यामत के दिन के ज़िन्दा किये जाने से बिल्कुल अलग होगा और यही रजअत है।

इसी लिये अहले बैत (अ) से इस सिलसिले में बहुत सी हदीसें नक़ल हुई हैं। यहाँ सिर्फ़ दो रिवायतों को बयान किया जा रहा है। इमाम जाफ़र सादिक (अ) इरशाद फ़रमाते हैं: तीन दिन ख़ुदा के हैं: ज़हूर इमाम ज़माना, रजअत और क़यामत।

आप एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं: दो शख्स हमारे दोबारा पलटने (रजअत) पर ईमान न रखे वह से नहीं है।

रजअत का फ़लसफ़ा

अक़ीद ए रजअत को जानने के बाद ज़हन में यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर रजअत क्यों वाक़े होगी और बाज़ लोगों को दोबारा इस दुनिया में पलटाए जाने का फ़लसफ़ा क्या है?

इस सिलसिले में ग़ौर व फ़िक्र करने से रजअत के दो अहम मक़सद सामने आते हैं:

1. बाज़ काफ़िरों को इस दुनिया में वापस भेज कर उन्हें हकीकी इस्लाम की अज़मत व सर बुलंदी और कुफ़्र की पस्ती को दिखाना।
2. नेक और सालेह लोगों को ईनाम और ज़ालिमों और काफ़िरों को सज़ा देना।

खुलासा

-अरबी ज़बान में 'रजअत' पलटने के मअना में है और इस्तेलाह में मौत के बाद और क़यामत से पहले लोगों के दोबारा दुनिया में वापस आने के मअना में है।

-इमामे ज़माना के ज़हूर के साथ ही रजअत होगी, यह एक ऐसी हकीकत है जो न अक़ल के मुखालिफ़ हैं और न ही वहयी ए खुदा के बर ख़िलाफ़। इस लिये कि खुदा ला महदूद कुदरत का हामिल है लिहाज़ा वह इस बात पर भी कादिर है कि इंसान को दोबारा इस दुनिया में पलटा दे।

-कुरआने मजीद में भी ऐसी आयतें मौजूद हैं जिनसे वाज़ेह तौर पर अक़ीद ए रजअत साबित होता है। इमाम जाफ़र सादिक़ (अ) फ़रमाते हैं कि जो शख्स दुनिया में हमारे दोबारा पलटने पर यक़ीन न रखे वह हम से नहीं है।

रजअत के दो अहम फ़लसफ़े:

1. बाज़ काफ़िरों को दोबारा इस दुनिया में पलटा कर उन्हें इस्लाम की हक़ीक़ी अज़मत और कुफ़्र की ज़िल्लत दिखाना।
2. मोमिन और नेक लोगों को ईनाम और ज़ालिमों और काफ़िरों को सज़ा देना।

सवालात:

1. लुगत और इस्तेलाह में रजअत के क्या मअना हैं?
2. रजअत कब वाक़े होगी?
3. रजअत को अक़ली ऐतेबार से साबित करें?
4. रजअत के बारे में इमाम सादिक़ (अ) ने क्या फ़रमाया है?

5. रजअत के दो फ़लसफ़े बयान करें?

[1]. तफ़सीरे दुर्ूल मंसूर जिल्द ५ पेज ७७, सूर ए नम्मल आयत ८२ की तफ़सीर में

तेईसवाँ सबक़

बरज़ख़

आयाते कुरआन और अहादीस मासूमीन (अ) से मालूम होता है कि मौत इंसान की नाबूदी का नाम नहीं है बल्कि मौत के बाद इंसान की रूह बाक़ी रहती है। अगर आमाल नेक हों तो वह रूह आराम व सुकून और नेमतों के साथ रहती है और अगर आमाल बुरे हों तो क़यामत तक अज़ाब में मुब्तला रहती है।

मौत के बाद से क़यामत तक के दरमियान की ज़िन्दगी को बरज़ख़ कहा जाता है। बरज़ख़ की ज़िन्दगी कोई ख़याली ज़िन्दगी नहीं है बल्कि एक हकीक़ी ज़िन्दगी है।

बरज़ख़ के बारे में रिवायत में आया है कि

ان القبر رياض من رياض الجنة او حفرة من حفر النار

बरज़ख़ जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ या फिर जहन्नम की आग का एक हिस्सा है।[१]

हज़रत अली (अ) का फ़रमान

हज़रत अमीरुल मोमिनीन (अ) से एक तूलानी रिवायत कई सनदों के साथ मोतबर किताबों में नक़ल हुई है। आप उस रिवायत में बरज़ख के हालात को इस तरह बयान करते हैं:

जब इंसान की ज़िन्दगी का आखिरी दिन और आखिरत का पहला दिन होगा तो उस की बीवी, माल व दौलत और उस के आमाल उस के सामने मुजस्सम हो जायेंगे, उस वक़्त मरने वाला शख्स माल से सवाल करेगा कि कसम ख़ुदा की मैं तेरा लालची था अब बता तू मेरे हक़ में क्या कर सकता है? माल जवाब देगा अपना कफ़न मुझ से लेकर चले जाओ। फिर वह अपने बच्चों की तरफ़ रुख कर के कहेगा: कसम ख़ुदा की मैं तुम्हारा मुहिब और हामी था अब तुम मेरे लिये क्या कर सकते हो? वह जवाब देंगे हम आप को कब्र तक पहुँचा देंगे और उस में दफ़न कर देंगे, उस के बाद वह आमाल की तरफ़ करेगा और कहेगा कि ख़ुदा की कसम! मैं ने तुमसे मुँह फेर रखा था और तुम्हें अपने लिये दुशवार और मुश्किल समझता था अब तुम बताओ कि मेरे हक़ में क्या कर सकते हो? तो आमाल जवाब देंगे कि हम कब्र और क़यामत में तुम्हारे साथ रहेंगे यहाँ तक कि परवरदिगार के हुज़ूर में एक साथ हाज़िर होंगे।

अब अगर इस दुनिया से जाने वाला अवलियाउल्लाह में से होगा तो उसके पास कोई ऐसा आयेगा जो लोगों में सब से ज़्यादा खूबसूरत, खुशबूदार और खुश लिबास होगा और उससे कहेगा कि तुम्हें हर तरह के ग़म व दुख से दूरी और बहिशती रिज़क और जावेद वादी की बशारत हो, इसलिये कि अब तुम बेहतरीन मंज़िल में आ चुके हो वह मरने वाला वली ए खुदा सवाल करेगा “तू कौन है?” वह जवाब देगा मैं तेरा नेक अमल हूँ लिहाज़ा अब तुम इस दुनिया से बहिश्त की तरफ़ कूच करो, फिर वह गुस्ल और काँधा देने वाले अफ़राद से कहेगा कि इसकी तजहीज़ व तकफ़ीन को ख़त्म करो.....और अगर मय्यत खुदा के दुश्मन की होगी तो उसके पास कोई आयेगा जो मख़्लूक़ाते खुदा में सबसे ज़्यादा बद लिबास और बदबूदार होगा और वह उससे कहेगा मैं तुझे दोज़ख़ और आतिशे जहन्नम की ख़बर सुनाता हूँ फिर वह उसके गुस्ल देने वालों और काँधा देने वालों से कहेगा कि वह इसके कफ़न व दफ़न में देर करें।

जब वह क़ब्र में दाख़िल होगा तो क़ब्र में सवाल करने वाले आ पहुँचेंगे और उसके कफ़न को नोच देंगे और उस से मुखातिब हो कर कहेगें कि बता तेरा रब कौन है? नबी कौन है? और तेरा दीन क्या है? वह जवाब देगा कि मैं नहीं जानता। फिर सवाल करने वाले कहेगें कि क्या तूने मालूम नहीं किया और हिदायत हासिल नहीं की? फिर उस के सर पर ऐसा लोहे का गुर्ज़ लगायेंगे कि

जिस से जिन्नात व इंसान के अलावा ज़मीन के सारे जानवर हिल जायेंगे। उस के बाद वह उस की क़ब्र में जहन्नम का एक दरवाज़ा खोल देंगे और कहेंगे कि बदतरीन हालत में सो जा और वह हालत ऐसी होगी कि तंगी की शिद्दत की वजह से वह नैज़े और उस की नोक की तरह हो जायेगा और उस का दिमाग़ नाखुनों और गोशतों से बाहर निकल पड़ेगा। ज़मीन के साँप बिच्छू उससे लिपट जायेंगे और अपने डंक से उस के बदन को अज़ाब देंगे। मय्यत उसी अज़ाब में बाक़ी रहेगी। यहाँ तक कि खुदा उसे क़ब्र से उठायेगा। (बरज़ख़ का) अरसा उस पर इस क़दर सख़्त और दुशवार होगा कि वह हमेशा यह आरज़ू करेगा कि जल्द से जल्द क़यामत आ जाये।[२]

खुलासा

-मौत के बाद इंसान की रूह बाक़ी रहती है, अगर आमाल नेक हों तो वह रूह नेमतों से सर फ़राज़ रहती है और अगर आमाल बुरे हों तो क़यामत तक अज़ाब में मुबतला रहती है।

-मौत से क़यामत तक के दरमियानी मुद्दत को “बरज़ख़” कहा जाता है।

-इमाम अली (अ) ने अपने एक तूलानी बयान में बरज़ख़ के हालात को बयान किया है।

सवालात:

1. मौत के बाद इंसान की रूह के साथ कैसा सुलूक होता है?
2. बरज़ख़ किसे कहते हैं?
3. बयान किजिये कि बुरे आमाल रखने वाले के साथ क़ब्र में क्या होगा?

[1]. बिहारुल अनवार जिल्द ६ पेज १५९ रिवायत १९

[2]. तफ़सीरे अयाशी जिल्द २ पेज २२७, फ़ुरु ए काफ़ी जिल्द ३

चौबीसवाँ सबक

जन्नत

इंसान क़यामत में उठाये जाने के बाद अपने नाम ए आमाल को देखेगा और उसी के मुताबिक़ जन्नत या जहन्नम में जायेगा। जन्नत एक हमेशा बाक़ी रहने वाली जगह है जिसे खुदा वंदे आलम ने अपने नेक और सालेह बंदों को ईनाम देने के लिये पैदा किया है, जन्नत में हर तरह की जिस्मानी और रुहानी लज़ज़तें मौजूद होंगी।

जिस्मानी लज़ज़तें

क़ुरआन मजीद की आयतों में बहिश्त की बहुत सी जिस्मानी लज़ज़तों का तज़क़िरा हुआ है जिन में से बाज़ यह है:

1. बाग़: बहिश्त में आसमान व ज़मीन से भी ज़्यादा बड़े बाग़ होंगे। (सूर ए आले इमरान आयत १३३) यह बाग़ तरह तरह के फलों से भरे हुए होंगे। (सूर ए दहर आयत १४, सूर ए नबा आयत ३२)

2. महल: कुरआने मजीद में बहिश्त के घरों के बारे में "मसाकिने तय्यबा" का लफ़्ज़ आया है जिस में समझ में आता है कि उस में हर किस्म का आराम व सुकून होगा। (सूर ए तौबा आयत ७२)

3. लज़ीज़ खाने: कुरआन की आयतों से मालूम होता है कि बहिश्त में हर तरह के खाने होंगे। इसलिये कि इस बारे में

مما يشتهون.

(सूर ए मुरसलात आयत ४२) की ताबीर इस्तेमाल हुई है जिस के मअना हैं जन्नती जो भी चाहेगा वह हाज़िर होगा।

4. लज़ीज़ शरबत: जन्नत में तरह तरह के लज़ीज़ शरबत होंगे। इस लिये कि कुरआन मजीद में

لذة للشاربين

5. (सूर ए मुहम्मद आयत ४७) का इस्तेमाल हुआ है यानी वह शरबत, पीने वाले के लिये लज़ीज़ होता है।

6. बीवियाँ: ज़ौजा या बीवी इंसान के सुकून का सबब होती है। आयतों और हदीसों से मालूम होता है कि जन्नत में ऐसी बीवियाँ होंगी। जो हर तरह की ज़ाहिरी और बातिनी खुसूसियात से आरास्ता होंगी, वह इंतेहाई हसीन, मेहरबान और पाक होंगी। (सूर ए बकरा आयत २५, सूर ए आले इमरान आयत १५)

रुहानी लज़ज़ते

कुरआने मजीद में जन्नत की जिस्मानी लज़ज़तों की तरह बहुत सी रुहानी लज़ज़तों का भी तज़क़िरा हुआ है जिन में से बाज़ यह है:

1. मखसूस ऐहतेराम: जन्नत में दाखिल होते ही फ़रिश्ते उन का मखसूस इस्तिक़बाल करेंगे और हमेशा ऐहतेराम करेंगे, हर दरवाज़े से फ़रिश्ते दाखिल होंगे

और कहेंगे कि दुनिया में इज़्जत और इस्तेक्रामत की वजह से तुम पर सलाम हो।

(सूर ए राद आयत २३, २४)

2. मुहब्बत और दोस्ती का माहौल: बहिश्त में हर तरह की मुहब्बत और दोस्ती का माहौल होगा। (सूर ए निसा आयत ६९)

3. खुशी और मुसरत का अहसास: खुशी और मुसरत की वजह से जन्नत वालों के चेहरे खिले होंगे, उन की शकल व सूरत नूरानी, खुश और मुस्कुराती हुई होगी। (सूर ए अबस आयत ३९)

4. खुदा वंदे आलम की खुशानूदी: खुदा के राजी होने का अहसास सबसे बड़ी लज़्जत है जो जन्नत वालों को हासिल होगी। (सूर ए मायदा आयत ११९)

5. ऐसी नेमतें जिन का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता: जन्नत में ऐसी चीज़ें और नेमतें होंगी जिन का इंसान तसव्वुर भी नहीं कर सकता। पैगम्बरे इस्लाम (स) फ़रमाते हैं कि जन्नत में ऐसी नेमते होंगी जिन्हे न किसी आँख ने देखा है और न किसी दिल में उन का ख़याल भी आया होगा। (नहजुल फ़साहा हदीस २०६०)

कुरआने मजीद में जन्नत की उन तमाम जिस्मानी व रूहानी लज़्जतों और नेमतों की वजह से मुसलमानों से कहा गया है:

. لمثل هذا فليعمل العاملون .

(अगर ऐसी जन्नत चाहिये तो अमल करने वाले वैसा ही अमल करें।)

खुलासा

-इंसान अपने नाम ए आमाल के मुताबिक या जन्नत में जायेगा या जहन्नम में। जन्नत एक हमेशा बाक़ी रहने वाली जगह है जहाँ खुदा वंदे आलम नेक लोगों को इनाम देगा।

-जन्नत में बहुत से जिस्मानी व रूहानी लज़ज़तें और नेमतेँ होंगीं। जिस्मानी लज़ज़तें जैसे बाग, महल, लज़ीज़ खाने, लज़ीज़ शरबत, खूबसूरत बीवियाँ वगैरह।

-रूहानी लज़ज़तें जैसे जन्नत वालों को खास ऐहतेराम, मुहब्बत व दोस्ती का माहौल, खुशी का अहसास, खुशनूदी ए खुदा और ऐसी नेमतेँ जिन का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

-ऐसी जन्नत पाने के लिये आमाल भी उसी तरह करने होंगे। इस लिये कि कुरआन में वाज़ेह तौर पर इरशाद होता है:

لمثل هذا فليعمل العاملون

(सूर ए साफ़ात आयत ६०)

सवालात

1. जन्नत क्या है?
2. जन्नत की कम से कम तीन जिस्मानी नेमतों को बयान करें?

3. जन्नत की कम से कम तीन रूहानी लज़ज़तों को बयान करें?
4. कुरआन ने जन्नत हासिल करने का क्या तरीका बताया है?

पच्चीसवाँ सबक़

जहन्नम

क्रयामत में उठाये जाने के बाद कुफ़र व मुनाफ़ेकीन और गुनाह गार जहन्नम में जायेंगे। जहन्नम के अज़ाब और मुसीबतों का मुक़ाबला दुनिया की मुसीबतों से नहीं किया जा सकता।

कुरआने मजीद में खुदा वंदे आलम जहन्नम की बहुती ही दर्दनाक हालत के बारे में इरशाद फ़रमाता है “जिन्होंने हमारी आयतों को इंकार किया है जल्दी ही हम उन्हें आग में झोंक देंगे और जब भी उन के बदन की खाल जल कर खत्म हो जायेगी हम दोबारा एक नई खाल उन के बदन पर चढ़ा देंगे ता कि वह दोबारा

जलें और हमारे अज़ाब को चखें बेशक खुदा वंदे आलम कुदरत वाला और हकीम है।’

(सूर ए निसा आयत ६५)

जिस तरह से पिछले सबक में हमने पढ़ा कि खुदा ने जन्नत वालों के लिये जिस्मानी व रूहानी लज़ज़ते करार दी है उसी तरह से जहन्नम वालों के लिये भी खुदा ने जिस्मानी व रूहानी सज़ा का इंतेज़ाम किया है जिन में से कुछ यह है:

जिस्मानी अज़ाब

1. अज़ाब की शिद्दत: जहन्नम का अज़ाब इस क़दर शदीद होगा कि जहन्नम वाले यह आरज़ू करेगा कि अपनी बीवी, बच्चे, भाई और ज़मीन के तमाम लोगों को फ़िदा कर दे ताकि इस अज़ाब से निजात पा सके। (सूर ए मआरिज आयत ११, १४)

2. ख़ौफ़नाक आवाज़ें: जहन्नम में चीख व पुकार, फ़रियाद और भयानक आवाज़े होंगी। (सूर ए फ़ुरक़ान आयत १३, १४)

3. गंदा पानी: जब भी जहन्नम वाले प्यास की शिद्दत की वजह से पानी माँगेंगे तो उन्हें गर्म, गंदा और सड़ी हुआ पानी दिया जायेगा और वह उसे पी लेंगे। (सूर ए अनआम आयत ७०, सूर ए युनुस आयत ४, सूर ए क़हफ़ आयत २९, सूर ए मुहम्मद आयत १५)

4. खाना: ज़क़ूम (थूहड़) का पेड़, गुनाह करने वालों के लिये खाना होगा और पिघले हुए ताँबे की तरह पेट में खौलेगा। (सूर ए दुखान आयत ४३, ४६)

5. आग का लिबास: कुरआने मजीद में इरशाद होता है कि जो लोग काफ़िर हुए हैं उन के लिये आग से लिबास काट कर निकाला जायेगा और जलती और खौलती हुई एक बहने वाली चीज़ उन के सर पर डालेगी जिस की वजह से उन का ज़ाहिरी और बातिनी हिस्सा पिघल जायेगा। (सूर ए हज आयत १९, २१)

रूहानी अज़ाब

1. ग़म व दुख और हसरत: जहन्नम वाले जब भी जहन्नम के ग़म व दुख से निकलना चाहेंगे उन से कहा जायेगा कि पलट जाओ और जहन्नम के अज़ाब को चखो। (सूर ए हज आयत २२)

2. लानत: जहन्नम वाले एक दूसरे पर लानत भेजेगें। (सूर ए अनकबूत आयत २५)

3. शैतान की बुराई: जहन्नम वाले शैतान से कहेगें कि तुम्हारी वजह से हम गुमराह हुए। वह जवाब देगा कि खुदा ने तुम्हे सच्चा वादा दिया तुम ने कबूल न किया और मैंने झूठा वादा दिया और तुमने कबूल कर लिया। लिहाज़ा मेरे बजाए खुद को बुरा भला कहो। (सूर ए इब्राहीम आयत २२)

4. जहन्नम में जाने का सबब: कुफ़्र व निफ़ाक की वजह से तो लोग जहन्नम में जायेगें ही उस के अलावा अगर कोई इबादात और वाजिबात को बजा न लाये और जिन चीज़ों से मना किया गया है उन्हे अंजाम दे वह भी जहन्नम में जायेगा। इस लिये कि कुरआने मजीद में इरशाद होता है (जन्नत वाले, जहन्नम वालों से सवाल करेगें कि किस चीज़ ने तुम्हे जहन्नम में झोंक दिया? वह जवाब देगें कि हम नमाज़ी नही थे, ग़रीबों की मदद नही करते थे, बुराई करने वालों के साथ हो जाते थे और क़यामत का इंकार करते थे।) (सूर ए मुद्दसिर आयत ४०, ४२)

खुलासा

- कुफ़्रार, मुनाफ़ेकीन और गुनाहगार लोग जहन्नम में जायेगें।

- जहन्नम में बहुत से जिस्मानी और रुहानी अज़ाब होंगे जो दुनिया के अज़ाब और सज़ा से काबिले क़यास न होंगे।

- जहन्नम वाले शदीद अज़ीब में रहेंगे, उन के आस पास भयानक आवाज़े होंगी, जहन्नम वालों का खाना गंदा और सड़ा हुआ पानी और आग का खाना होगा और उन का लिबास आग का होना।

- उन का रुहानी अज़ाब यह होगा कि वह हमेशा ग़म व दुख में रहेंगे, एक दूसरे पर लानत भेजेगें, इसी तरह शैतान भी उन की बुराई करेगा।

- कुफ़र व मुनाफ़ेकीन तो जहन्नम में जायेंगे ही, उन के अलावा वह लोग भी जहन्नम में जायेंगे जो नमाज़ नहीं पढ़ते, ग़रीबों की मदद नहीं करते, बुरों का साथ देते हैं और क़यामत का इंकार करते हैं।

सवालात

1. जहन्नम किन लोगों के लिये है?

2. जहन्नम वालों का खाना पीना, लिबास और उन के आस पास का माहौल कैसा होगा?
3. शैतान जहन्नम वालों से क्या कहेगा?
4. कुफ़र व निफ़ाक़ के अलावा जहन्नम में जाने के दूसरे असबाब क्या हैं?

फेहरीस्त

अक्रायदे नूर	1
मुकद्दमा.....	2
इस मजमूए की बाज़ खुसूसियात.....	3
पहला सबक	4
दीन की ज़रूरत और इस्लाम की हक्कानीयत.....	4
दीन	4
दीन की ज़रूरत	4
पहला रास्ता	5
दूसरा रास्ता	5
तीसरा रास्ता	6
इस्लाम की हक्कानीयत.....	7
दूसरा सबक	10
दीन की हक्कीकत.....	10
इस बुनियाद पर दीन तीन चीज़ों का मजमूआ है:.....	11
1. अक्रायद व उसूले दीन.....	11
2. अखलाक	13
3. अहकाम व अमल	13
तीसरा सबक	16
उसूले दीन में तकलीद करना सही नहीं है	16

चौथा सबक.....	21
खुदा की मारेफत फितरी है.....	21
पाँचवा सबक	25
दुनिया का हैरत अंगेज़ निज़ाम और खुदा की मारेफत	25
छठा सबक.....	29
तौहीद और उस की दलीलें.....	29
सातवाँ सबक.....	33
तौहीद की किस्में.....	33
आठवाँ सबक.....	36
तौहीद के फ़ायदे.....	36
1. गुनाहों से बचना	37
2. तंहाई का अहसास न करना.....	37
3. ज़िन्दगी के मक़सद से वाकिफ़ होना	38
4. नेक कामों से न थकना	38
नवा सबक	40
सिफ़ाते सुबूतिया.....	41
दसवाँ सबक	45
सिफ़ाते सल्बिया.....	45
ग्यारहवाँ सबक	48
अद्ल.....	48

अदले खुदा का मतलब.....	48
अदले खुदा की दलील.....	50
बारहवाँ सबक.....	53
नबुव्वत.....	53
नबी की ज़रूरत.....	53
इंसान एक समाजी मखलूक है.....	55
तेरहवाँ सबक.....	59
नबियों का मासूम होना.....	59
चौदहवाँ सबक.....	64
नबी को पहचानने के रास्ते.....	64
1. मोजिज़ा.....	65
2. गुज़िशता पैग़म्बरों की पेशीनगोई.....	66
पंद्रहवाँ सबक.....	69
पैग़म्बरे इस्लाम (स) आखिरी नबी.....	69
पैग़म्बरे इस्लाम (स) के खातिमुल अंबिया होने की दलीलें.....	70
सोलहवाँ सबक.....	74
पैग़म्बरे इस्लाम (स) का सबसे बड़ा मोजिज़ा.....	74
वलीद बिन मुगीरा का क्रिस्सा.....	77
सतरहवाँ सबक.....	81
इमामत और इमाम की ज़रूरत.....	81
1. इमाम की सर परस्ती में कमाल तक पहुचना.....	81

2. आसमानी शरीयतों की हिफ़ाज़त	82
3. उम्मत की समाजी और सियासी रहनुमाई	83
4. इतमामे हुज्जत	83
अठ्ठारवाँ सबक	86
इमाम की सिफ़ात	86
1. मासूम होना	86
2. इल्मे ग़ैब का हामिल होना	87
3. शुजाअत होना	87
4. ज़ोहद व तक़वा का हामिल होना	88
5. बेहतरीन अख़लाक़ से मुत्तसिफ़ होना	89
6. खुदा की तरफ़ से होना	89
उन्नीसवाँ सबक	93
हमारे अइम्मा (अ)	93
हमारे अइम्मा बारह हैं	93
इमामों की नाम बनाम वज़ाहत	94
ज़माने के इमाम को पहचानना	95
बीसवाँ सबक	99
मआद (क़यामत)	99
मआद की दलीलें	99
1. खुदा का आदिल होना	100
2. इंसान का बे मक़सद न होना	100
इक्कीसवाँ सबक	104

मआद जिस्मानी है या रूहानी	104
बाईसवाँ सबक	107
रजअत.....	107
रजअत अक़ल की रौशनी में.....	107
रजअत कुरआन की नज़र में.....	108
रजअत का फ़लसफ़ा	112
तेईसवाँ सबक.....	115
बरज़ख.....	115
हज़रत अली (अ) का फ़रमान.....	116
चौबीसवाँ सबक.....	121
जन्नत.....	121
जिस्मानी लज़्जतें.....	121
रूहानी लज़्जते.....	123
पच्चीसवाँ सबक.....	127
जहन्नम	127
जिस्मानी अज़ाब	128
रूहानी अज़ाब	129
फेहरीस्त	133